श्री महावीराय नमः

जय गुरु हीरा | श्री कुशलरत्नगजेन्द्रगणिभ्यो नमः | जय गुरु मान

परस्परोपग्रहो जीवानाम्

रत्नम्

वर्ष-2, अंक-42 | 25 फरवरी, 2020 | जोधपुर (राज.)

हिन्दी पाक्षिक | पृष्ठ-32 | मूल्य 5/- प्रति अंक

RNI No. RAJHIN/2015/66547

सामायिक-प्रतिक्रमण का ज्ञान करें

जरूरत है बुराई हटाने के साथ जीवन-निर्माण के कुछ सूत्र अपनाने की। गुरु हस्ती ने एक सूत्र कहा- ''घर-घर में स्वाध्याय होना चाहिए।'' स्वाध्याय में आचारांग या दशवैकालिक अथवा दृष्टिवाद की बात के बजाय आप पहले सामायिक, प्रतिक्रमण का ज्ञान करें, जीवन-निर्माण के लिए व्रत-नियम का अभ्यास करें। दृष्टिवाद के ज्ञान के लिए तो आर्य रक्षित की माता ने जो कहना था, कह दिया। रक्षित वेद-वेदांगों में निष्णापता प्राप्त कर विद्वान् बनकर घर लौटा। सारा नगर स्वागत के लिए तैयार था परन्तु माँ स्वागत के लिए नहीं पहुँची। स्वागत-अभिनन्दन के बाद रक्षित घर पर पहुँचा। देखा, माताजी सामायिक कर रही थी। सामायिक के बाद रक्षित ने पूछा- ''मातुश्री! आप वहाँ क्यों नहीं पधारी? क्या आपको मेरे शिक्षण से संतोष नहीं?'' माँ का उत्तर था- ''बेटा! तू पढ़-लिखकर आया इसमें संतोष कैसा? पुत्र तुमने तो जो ग्रन्थ पढ़े हैं, उनसे तो भव-भ्रमण की ही वृद्धि हो सकती है। अगर तू स्व-पर कल्याण करने वाले दृष्टिवाद को पढ़कर आया होता तो मुझे संतोष होता।''

-'हीरा-प्रवचन-पीयूष', भाग-5 से साभार

अध्यक्ष की कलम से

सादर जय जिनेन्द्र!

मैं संघ की सभी शाखाओं को जिनमें संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् के सभी सम्मानित सदस्यगण सम्मिलित हैं, रत्नम् के माध्यम से आग्रह-अनुरोध इस लक्ष्य से कर रहा हूँ कि आप सब गुरु हस्ती-गुरु हीरा के अनन्य आस्थावान भक्त तो हैं ही, मेरे गुरुभ्राता भी हैं अतः आप-सब मेरी बात को ध्यान से पढ़ेंगे-समझेंगे ओर जीवन-व्यवहार में अपनाकर गुरु हस्ती के दीक्षा शताब्दी वर्ष में अपना अर्ध्य अर्पित करेंगे।

मैं चाहता हूँ कि संघनायक पूज्य गुरुदेव श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की प्रेरणा कि रत्नसंघ का प्रत्येक सदस्य सामायिक-प्रतिक्रमण कण्ठस्थ करें, जिनको याद है वे समाायिक-प्रतिक्रमण का अर्थ याद करके इस दिशा में गति करें। हमारे आचार्यप्रवर प्रभृति संघ-सतीवृन्द समय-समय पर ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन की प्रेरणा करेंगे, हम-सब उस प्रेरणा के अनुसार आचरण करने का प्रयास कर गुरु भक्ति और संघनिष्ठा का परिचय दें। मेरा संघ की ओर से विनम्र निवेदन है कि हम गुरु हस्ती की दीक्षा शताब्दी वर्ष में संघ की एकता-एकरुपता बनाए रखकर परस्पर प्रेम-मैत्री-सहयोग की भावना को और अधिक मजबूत बनाए तो हम निश्चित रूप से गौरवशाली संघ सदस्य होने का आदर्श उपस्थित कर सकेंगे।

हम, सामाजिक कार्यकर्त्ता है, समाज में रहते हैं, अतः देश-काल-परिस्थिति से कहा या देखा-देखी अथवा चाहे-अनचाहे हमारे संघ में कमियें-कमजोरियों को संघ में आने से रोकने में सफल रहे हैं। गुरु हस्ती के प्रखर व्यक्तित्व, प्रभावी कृतित्व और परिपक्व नेतृत्व से हमें सीख लेनी है और गुरु हस्ती के पट्टधर गुरु हीरा के सान्निध्य में आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का दीक्षा शताब्दी वर्षा जो माघ शुक्ला द्वितीया तद्नुसार 26 जनवरी, 2020 से प्रारम्भ हुआ, उसे एक वर्ष तक, जो आगामी वर्ष 13 फरवरी 2021 को समापन तक ज्ञानाराधन-तपाराधन-धर्माराधन ओर संघ-दीप्ति में अपना योगदान करने में सहर्ष अपनी भूमिका व भागीदारी निभायेंगे तो निश्चित रूप से गुरु के दीक्षा शताब्दी वर्ष में संघोन्नति को साकार रूप देने में सफल होंगे। राष्ट्रीय संघ के कार्यक्रमों को उत्साह से मनाते हुए आप अपने स्तर पर अन्य दिवसों पर कार्य योजना बनाएं, कार्यक्रमों की क्रियान्विति करें और संघ की एकरुपता बनाए रखकर परस्पर स्नेह-सहयोग की भावना को बढ़ायेंगे, इस आशा से आप स्वयं तो पहल करें ही, अपने पारिवारिक-परिजनों, इष्ट-मित्रों और अपने सम्पर्क में आने वालों से भी प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य गुरु हस्ती के दीक्षा शताब्दी वर्ष में जितना बन सके उतना सहयोग लेने का प्रयास करेंगे।

आप संघ मुख्यालय से सम्पर्क बनाए रखें। संघ की मर्यादानुसार कार्य करें और अपने स्थानीय स्तर पर कार्यक्रमों के साथ कार्यक्रमानुसार गति-प्रगति की समय-समय पर जानकारी आवश्यक रूप से देने का लक्ष्य रखें। आप-सब संघ सदस्यों को संघनायक की प्रेरणा और रत्नसंघ की भावना को ध्यान में दिलाएं और पूरे मनोयोग से गुरु के दीक्षा शताब्दी वर्ष के उत्साह से मनाएं। आप-सबकी स्वस्थता-प्रसन्नता की शुभकामना के साथ..... |-प्रकाश टाटिया, राष्ट्रीय अध्यक्ष

विचरण विहार

(दिनांक 24.02.2020 की स्थिति)

☆ परमश्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्र जी म.सा. आदि ठाणा 11 श्रीमती शरद् चन्द्रिका मुणोत स्वाध्यायभवन, पीपाड़ में सुख-शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 सुभानपुरा, बड़ौदा में सुखशान्तिपूर्वक विराज रहे हैं।

☆ तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 3 लापोलाई गांव, जिला-नागौर में सुखशान्तिपूर्वक विराज रहे हैं। अग्रविहार मदनगंज की ओर संभावित है।

☆ श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 जैन स्थानक, बम्बई गली, अमलनेर में सुखशान्ति-पूर्वक विराजमान है। अग्रविहार धुलिया की ओर संभावित है।

☆ श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्रतापनगर, जोधपुर में सुखशान्तिपूर्वक विराज रहे हैं।

☆ साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 9 सुशीलजी जैन का मकान, 34 / 222, प्रतापनगर, जयपुर में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ विदुषी महासती श्री सुशीलाकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 8 स्वाध्याय भवन, महावीर कॉलोनी, पुष्कर (जिला-अजमेर) में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 9 जैन भवन, अमलनेर, जिला-जलगांव में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री मनोहरकंवरजी म.सा.आदि ठाणा 3 प्राज्ञ भवन, सरवाड़, जिला-अजमेर में सुखशान्तिपूर्वक विराज रहे हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 4 महिला स्वाध्याय भवन, पीपाड़ में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री चन्द्रकलाजी म.सा. आदि ठाणा 7 श्यामनगर, जोधपुर में सुखशान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री इन्दुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 10 जैन भवन, पुल्लियार कॉईल स्ट्रीट, चेन्नई में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा. आदि ठाणा 3 सामायिक-स्वाध्याय भवन, पावटा, जोधपुर में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 5 नित्यानन्द नगर, जयपुर में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 5 सुराणा भवन, भुसावल, जिला-जलगांव में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री निःशल्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5 महावीर तपोवन

आश्रम, बैंगलुरु रोड़ (कर्नाटक) में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। अग्र विहार बैंगलुरु की ओर संभावित है।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 तिलकनगर, जयपुर में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ सेवाभावी महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 जैन भवन, एम.आई.डी. सी. एरिया, जलगांव में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री रुचिताजी म.सा. आदि ठाणा 6 अम्बेडकर भवन, बारन्दूर गांव (कर्नाटक) में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। अग्र विहार मैसूर की ओर संभावित है।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री स्नेहलताजी म.सा. आदि ठाणा 4 आसीन्द नगर, सांगानेर, जयपुर में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 जैन स्थानक, महावीर नगर, टोंक रोड़, जयपुर में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री निष्ठाप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3 सामायिक-स्वाध्याय भवन, खेरली, जिला-अलवर में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं।

☆ व्याख्यात्री महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 जैन स्थानक, रानी का बांबरोड़ गांव, जिला-पाचोरा में सुख शान्तिपूर्वक विराजमान हैं। अग्रविहार पाचोरा की ओर संभावित है।

सभी संत-सती मण्डल के रत्नत्रय की साधना में सहायक स्वास्थ्य में समाधि है तथा विचरण विहार सुख-शांति पूर्वक चल रहा है।

पुण्यधरा पीपाड़ में आचार्यप्रवर के विराजने से समवशरण सा माहौल

श्रमण संस्कृति के उन्नायक, आचार सम्पदा में प्रभावक, समाजोत्थान के संवाहक, रत्नसंघ के कुशल नायक, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, दिव्य-दिवाकर, ज्ञान-सुधाकर, गुण रत्नाकर, सामायिक-शीलव्रत-रात्रिभोजन-त्याग, व्यसनमुक्ति के प्रबल प्रेरक, जिनशासन गौरव, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा., महान् अध्यवसायी, सरस व्याख्यानी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा एवं व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., सेवाभाविनी महासती श्री विमलावतीजी म.सा., सरलमना महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा के विराजने से पुण्यधरा पीपाड़ में धर्म प्रभावना का सुन्दर प्रसंग बना हुआ है। पूज्य आचार्य भगवन्त सहित समस्त चारित्रात्माओं के रत्नत्रय की साधना-आराधना में सहायक शरीर में समाधि व अनुकूलता है।

विगत मासांत में 25 दिसम्बर को श्रद्धेय श्री कल्पेशमुनिजी म.सा. ने पचोले

की तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य गुरुदेव के पावन मुखारविन्द से लिये। 26 दिसम्बर को सिद्धांतशाला में अध्ययनरत छात्र पूज्य गुरु भगवन्त की चरण सन्निधि में रहकर अवकाशकालीन समय में ज्ञानार्जन की भावना लिये जयपुर से पीपाड़ आये। अधिष्ठाता श्री दिलीपकुमारजी जैन के अनुसार 25 छात्रों ने पावन सान्निध्य में रहकर नवीन ज्ञान व प्रवचन कला सीखने का अभ्यास किया। शासन सेवा समिति के सदस्य श्री गौतमचन्द जी हुण्डीवाल हर माह की तरह त्रिदिवसीय सेवा सन्निधि का लाभ लेने आये। 27 दिसम्बर को श्री कांतिलालजी चौधरी-शासन सेवा समिति के सदस्य ने भी पूज्य आराध्य के चरणों में सेवा का लाभ लिया। 28 दिसम्बर को चेन्नई से वीरपिता श्री पुखराजजी बाफना के स्वर्गवास पर वीरभ्राता श्री राजेशजी बाफना परिवारजनों के साथ मांगलिक श्रवण करने पूज्यप्रवर की सेवा में आये। संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत दो दिवसीय दर्शन-वंदन-सेवा की भावना से जन्मभूमि में विराज रहे पूज्य आचार्य भगवन्त की सेवा में उपस्थित हुए। संघ के निवर्तमान राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री ज्ञानेन्द्रजी बाफना ने भी गुरु चरणों की सन्निधि का लाभ लिया। 28 दिसम्बर को ही संस्थान के छात्र श्री क्षितिजजी जैन, अलीगढ़-रामपुरा ने पूज्य गुरुदेव के चरणों में 1008 बार सविधि वंदन कर भक्ति का अर्घ्य अर्पित किया। 29 को पांच्यावाला संघ-जयपुर से विनति की भावना से चारित्रमूर्ति पूज्य श्री की सेवा में आया। संघ के राष्ट्रीय कोषाध्यक्ष श्री बसन्तजी मुथा-मुम्बई ने आत्मलक्षी पूज्यपाद की सेवा सन्निधि का लाभ लेकर धन्यता का अनुभव किया। कोसाणा से जैन-जैनेतर बन्धु आगामी चातुर्मास की विनति लेकर भगवन् की सेवा में आये। आज ही तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 जोधपुर से विहार फरमाकर पूज्य गुरुदेव की सेवा में पीपाड़ पधारे। 30 दिसम्बर को कोसाणा संघ पूज्य आचार्य भगवंत के आगामी चातुर्मास की पुरजोर विनति लेकर उपस्थित हुआ। 31 दिसम्बर को दीक्षार्थिनी मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत (नरसिंहपुर) एवं दीक्षार्थिनी मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत (भोपालगढ़-जोधपुर) पीपाड़ में पूज्य आचार्य भगवंत के दर्शन-वंदन-मंगलमय उद्बोधन की भावना से गुरु चरण सन्निधि में उपस्थित हुई। साथ में सूरत में प्रव्रज्या अंगीकार करने जा रहे बाल वैरागी भव्यजी मेहता भी थे। पीपाड़ संघ द्वारा उनका वरघोड़ा व अभिनन्दन परिवारजनों सहित किया गया। व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 5 बारणी चातुर्मास पश्चात् विहार फरमाकर आज प्रातः ही पीपाड़ पधार आये थे। धर्मसभा में श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा., महासती श्री वृद्धिप्रभाजी म.सा., मुमुक्षु आत्मन् सुश्री दीपिकाजी मुणोत, मुमुक्षु आत्मन् सुश्री निमिषाजी लुणावत, मुमुक्षु आत्मन् भव्यजी मेहता (मंदिरमार्गी), तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. व अंत में परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवन्त ने प्रवचनामृत में सुभाषित वचनों के माध्यम से फरमाया कि संयम की महिमा गाने की नहीं, अपितु लेने की, अंगीकार करने की वस्तु है। इस राता उपासरा की भी महिमा रही है। यह स्थल प्रातः 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक साधना-आराधना करने वालों से भरा रहता है। मैंने

स्वयं ने यहाँ का वह रूप देखा है। पहले वाला यहाँ से तब जाता जब दूसरा सामायिक करने वाला आ जाता। पीपाड़ वालों से कह रहा हूँ- अनुमोदना स्वरूप धर्मस्थान में पीपाड़ रहते साल भर तक के लिये एक सामायिक करने का लक्ष्य रखना। खाली जय बोलने से गुणगान कर लेने से पेट भरने वाला नहीं है। पुण्यवानी बढ़ाने के लिये अपना मन एक घण्टा सामायिक के लिये नियत करें। गुरुदेव कहा करते थे- बाल्टी व रस्सी कुए में डाल दी, यदि एक हाथ रस्सी हाथ में है तो रस्सी व बाल्टी दोनों आ जायेगी। अतः 24 घण्टे में एक घण्टा धर्मकरणी के लिये निश्चित करें। इस प्रसंग पर दीक्षा समिति के संयोजक श्री महेन्द्रजी कटारिया व सहसंयोजक श्री महावीरजी मकाणा अपने दायित्वों का निर्वहन करते हुए समस्त दीक्षा पूर्व आयोजनों के समय भी उपस्थित रहे।

प्रतापनगर-जोधपुर संघ अपने क्षेत्र की विनति लेकर उपस्थित हुआ। आगामी चातुर्मास हेतु रालेगांव संघ का विनति पत्र संघनायक की पावन सेवा में प्रस्तुत किया गया। वर्षान्त के अंतिम दिवस पर अनेक क्षेत्रों से श्रद्धालु भाई/बहिन प्रशांत-विभूति पूज्यवर्य की चरण सन्निधि में साधना-आराधना हेतु पधारे। उन श्रद्धावान श्रावकों में से जयपुर, जोधपुर, सवाईमाधोपुर, सुमेरगंज मण्डी, ब्यावर, गोटन, चेन्नई, मुम्बई, बैंगलोर, बंगारपेट, माण्डल, होलनांथा, सिरपुर, निमाज, अलीगढ़-रामपुरा, देई, हरियाढाणा, भोपालगढ़, कोसाणा, पाली, अजमेर, उणियारा, बिलाड़ा, बुचेटी, अरटिया, रणसीगांव आदि स्थल वालों ने रात्रि में संवर आराधना की।

01 जनवरी, 2020 को प्रातः सूर्योदय पश्चात् आचार्य भगवन्त ने मांगलिक फरमाने की कृपा की। सवाईमाधोपुर शहर से श्रावक बन्धु चातुर्मास की विनति लेकर गोटन व देई संघ भी चातुर्मास की भावना से तथा ब्यावर, रणसीगांव, नाडसर संघ क्षेत्र फरसकर उपकृत करने के भाव निवेदन करने पूज्य ज्ञान महोदधि की सेवा में उपस्थित हुए। नववर्ष पर अनेकानेक भाई/बहिनों का पूज्यवर्य के दर्शन-वंदन व मांगलिक श्रवण हेतु दिन भर आने का क्रम अनवरत बना रहा। 02 जनवरी को खजवाना से जगदीशजी गुरुसा का समस्त परिवार कल्याणकारी पूज्यप्रवर की सेवा में आया।

इसी दिन परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर के स्वास्थ्य में उतार-चढ़ाव वाले समाचार समय-समय पर बराबर मिल रहे थे, पर चिंताजनक जैसी स्थिति वाले समाचार नहीं थे। सायंकालीन प्रतिक्रमण की वंदना का क्रम आरम्भ हो ही रहा था कि श्री गिर्राजजी जैन के माध्यम से आकस्मिक समाचार विदित हुए कि परम श्रद्धेय उपाध्याय प्रवर नहीं रहे, उपाध्यायप्रवर ने सायं समय 5.55 पर अंतिम श्वासोच्छ्वास के साथ नश्वर देह का परित्याग कर दिया है। अभी आगामी 14 जनवरी को 86 वें बसन्त में प्रवेश करने वाले, 57 वर्षीय निर्मल संयम साधना के धनी, 29 वर्षीय उपाध्याय पद पर अधिष्ठित रह सारणा-वारणा-धारणा करने वाले, रत्नसंघ की विरल विभूति, वरिष्ठतम संतरत्न के प्रयाण पर पूज्य आचार्य भगवन्त व संतरत्नों ने 4-4 लोगस्स का कायोत्सर्ग किया। शांत-दांत-गम्भीर, परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा.

की जिनशासन में रिक्तता से निःस्तब्धता मय वातावरण बन जाना स्वाभाविक था। पूज्य आचार्य भगवन्त तो समाचार श्रवण के साथ मौन साधना में रत हो गये। 03 जनवरी को आचार्य श्री सहित समस्त 10 मुनिराजों व समस्त 9 महासतियाँ जी म.सा. के चउत्थं भत्तं की आराधना का ही लक्ष्य रहा। अनेक ग्राम-नगरों विशेषकर जोधपुर से विपुल संख्या में दिन के 4 बजे से रात्रि 10 बजे तक अपूरणीय क्षति वाले भाव पूज्य गुरु भगवन् के चरणों में निवेदन करने वालों का तांता लगा रहा। संघ के चेयरपर्सन श्री मोफतराजजी मुणोत एवं शासन सेवा समिति के संयोजक श्री रतनलाल सी. बाफना की भी इसी संदर्भ में उपस्थिति रही। 04 जनवरी को परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. के प्रयाण कर प्रातः 9.00 से 11.30 तक राता उपासरा में गुणानुवाद सभा का कार्यक्रम चला। पूज्य आचार्य प्रवर, मुनिवृंद-महासतियाँजी म.सा. एवं कई प्रबुद्ध भाई/बहिनों ने उनकी गुण सौरभता पर भावों की अभिव्यक्ति की। धर्म सभा के संचालन का कार्य प्रबुद्ध स्वाध्यायी श्री सुमतिचंदजी मेहता करते आ रहे है। आध्यात्मिक शिक्षण संस्थान में अध्ययनरत छात्र श्री धीरजजी कोठारी निमाज निवासी ने अठाई की तपस्या की आराधना पूज्य आचार्य भगवंत की चरण सन्निधि में रहकर की। शासन सेवा समिति की सदस्य डॉ. श्रीमती मंजुलाजी बम्ब ने परमोपकारी पूज्य गुरुदेव की सेवा सन्निधि का लाभ लिया। 05 जनवरी को शक्तिनगर संघ-जोधपुर के अधिकांश श्रावक पूज्य पाद की सेवा में आगामी चातुर्मास की विनति लेकर उपस्थित हुए। 08 जनवरी को चेन्नई से आवड़ी संघ महासतियाँजी म.सा. के चातुर्मास की विनती लेकर प्रशांतचेत्ता पूज्यप्रवर की सेवा में आया।

09 जनवरी को पूज्य आचार्य भगवंत श्री हस्तीमलजी म.सा. का 110 वां जन्मदिवस था। इस प्रसंग पर श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा., महासती श्री ऋद्धिप्रभाजी म.सा., महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा., महासती श्री विमलावतीजी म.सा., श्रद्धेय श्री सुभाषमुनिजी म.सा., तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. एवं महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने उपकारी पूज्य गुरुदेव के व्यक्तित्व- कृतित्व पर विशेष प्रवचनामृत फरमाया। सेवाभाविनी महासती श्री विमलावतीजी म.सा.ने गुरु हस्ती के जन्मदिवस पर 11 दिवसीय तपस्या के प्रत्याख्यान पूज्य श्री के मुखारविन्द से लेकर उग्र तपस्या का अर्ध्य पावन स्मृति में अर्पित किया। इस अवसर पर 3-3 सामूहिक सामायिक आराधना, 50 से अधिक उपवास, 100 के लगभग एकासन व 6 तेले के तप की आराधना महान् अध्यवसायी मुनिश्री की प्रेरणा से हुई। कोसाणा संघ आगामी चातुर्मास की विनति लेकर व धनोप संघ के भाई/बहिन संघ शिरोमणि की सेवा में आये।

10 जनवरी को अमरावती गुजराती संघ चातुर्मास की भावना से एवं हर पूर्णिमा को साधना-आराधना के लक्ष्य से अध्यात्म योगी पूज्य गुरु भगवन् की चरण सन्निधि में विजयनगर, जयपुर, हिण्डौन, सैलाना, बैंगलोर से श्रद्धालु पूनमिया श्रावक बन्धुओं का आना हुआ। 11 को चेन्नई से सैदापेट संघ व सेंधवा संघ आगामी चातुर्मास की विनति लेकर वाणी भूषण पूज्यवर्य की सन्निधि में आये। 12 को रतकूड़िया गांव

से सभी समाज के भाई शेषकाल फरसने व फाल्गुनी चौमासी की विनति की भावना से भगवन् की सेवा में आये। जोधपुर से दिग्विजय नगर संघ व घोड़ों का चौक संघ संत-सतियों के चातुर्मास की विनति वाले भाव निवेदन करने करुणासागर पूज्य श्री की शरण में उपस्थित हुए। 14 जनवरी को प्रातः मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 जोधपुर से विहार फरमाकर पूज्य आचार्यप्रवर की सेवा में प्रातः ही पधारे। संयोग से अल्पदिन पूर्व संसार से विदा होने वाले परम श्रद्धेय उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का 86 वां जन्मदिवस उनकी परोक्षता में सामूहिक सामायिक, एकाशन, उपवास आदि के साथ त्यागपूर्वक मनाया गया। उन महापुरुष की गुण गरिमा पर श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा., महासती श्री विनीत प्रभाजी म.सा., महासती श्री विमलावतीजी म.सा., श्रद्धेय अभयमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री जितेन्द्रमुनिजी म.सा., तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. तथा महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. ने विशेष प्रवचनामृत फरमाया। अजमेर संघ चातुर्मास की विनति लेकर संयम सुमेरु पूज्य गुरुदेव की सेवा में उपस्थित हुआ। 15 जनवरी को चिंगलपेठ संघ चातुर्मास की भावना से संघ हित चिंतक पूज्यवर्य के चरणों में आया। 16 जनवरी को न्याय के क्षेत्र में सर्वोच्य पद पर आसीन रहे पूर्व सी.जे.आई. श्री राजेन्द्रमलजी लोढ़ा ने धर्मसहायिका सहित दर्शन-वंदन-सेवा का लाभ लिया। रत्नसंघ के लिये यह गौरव की अनुभूति है कि ऐसे उच्च पदासीन व्यक्ति भी अपने श्रावकीय कर्त्तव्यों का निर्वहन करते हुए, समय-समय पर आचार्य भगवंत की चरण सन्निधि में लाभ लेने की भावना रखे हुए हैं। 17 जनवरी को सवाईमाधोपुर पोरवाल क्षेत्र से रत्नसंघ के क्रियावान, ज्ञानवान, श्रद्धावान, भक्तिवान, श्रावकरत्न श्री रामदयालजी जैन के स्वर्गवास पर, श्री उम्मेदराजजी, श्री लालचन्दजी, श्री नमोकारजी, श्री मोहनलालजी, श्री धनराजजी जैन आदि समस्त परिवारजन मांगलिक श्रवण करने परमाराध्य पूज्य आचार्य भगवंत की सेवा में आये। रालेगांव संघ चातुर्मास के भाव पूज्यप्रवर के चरणों में निवेदन करने आया। 18 जनवरी को रणसीगांव संघ क्षेत्र पर कृपा वर्षण कर, पदरज से पावन कर, स्वास्थ्य समाधि के साथ अधिकतम विराजने के भाव लेकर कल्याणकारी गुरु भगवन् की सेवा में उपस्थित हुआ। 21 जनवरी को जोधपुर से दिग्विजय नगर संघ संत-सतियों के चातुर्मास की विनति लेकर संघशास्ता पूज्य गुरुदेव की पावन सन्निधि में आया। 23 जनवरी को कोसाणा से सभी समाज के मुख्य प्रतिनिधिगण पूज्य आचार्य भगवंत के चातुर्मास की भावभरी पुरजोर विनति करने परमोपकारी पूज्यपाद की सेवा में आया। संरक्षक मण्डल के सम्माननीय सदस्य श्री विमलचंदजी डागा-जयपुर ने दर्शन-वंदन के साथ श्रुतसेवा का सुन्दर लाभ लिया।

धार्मिक गतिविधियों के अन्तर्गत प्रातःकालीन प्रार्थना श्रद्धेय श्री रविन्द्रमुनि जी म.सा. , प्रवचन श्रृंखला में महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., मधुर व्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., तत्त्वचिंतक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. का पूज्य आचार्य भगवंत के निर्देशानुसार, नियमित

चल रहा है। दोपहर समय आगमवाचनी महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म. सा. दशवैकालिक सूत्र की सरस, सरल, सुन्दर शब्दों में गूढ़ार्थ विवेचन सहित फरमा रहे हैं। उभयकाल प्रतिक्रमण का क्रम गतिमान है। संवर आराधना श्रद्धालु भाई/बहिन अनवरत कर रहे हैं। दर्शन, वंदन हेतु पूज्य गुरुदेव की सेवा में आगतों के आने का क्रम बराबर बना हुआ है। यहाँ का युवारत्न ऊर्जावान व उत्साही है। गुरु भक्तों की सेवा में अहर्निश तत्पर रहते हैं। यहाँ की स्वधर्मी वात्सल्य भावना सुन्दर व अनुकरणीय है। संघाध्यक्ष श्री धनेन्द्रजी चौधरी व संघ मंत्री श्री सुमतिचंदजी मेहता व अन्य सभी पदाधिकारी व कार्यकर्त्तागण की सेवा-सहकार वाली भावना प्रमोदजन्य है।-जगदीश जैन

जलगांव में दीक्षा के पावन–प्रसंग के साथ ही संतप्रवर के सान्निध्य में अपूर्व धर्माराधन

रत्नवंश के अष्टम पट्टधर आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा., पूज्य श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 का जलगांव में 29 जनवरी, 2020 को सम्पन्न हुई मुमुक्षु बहन निमिषाजी लुणावत (नरसिंहपूर) के दीक्षा प्रसंग पर श्री वर्धमान स्थानकवासी श्रावक संघ, जलगांव की विनति पर एवं आचार्य भगवन्त के दिशानिर्देश मिलने पर दोनों सन्तों का उग्रविहार के साथ 16 जनवरी, 2020 को रतनलाल सी. बाफना जैन स्वाध्याय भवन में मंगल प्रवेश हुआ। 20 वर्षों के बाद रत्नसंघ के सन्तों का जलगांव में आगमन होने से सभी में एक खुशी का माहौल था। सन्तों के आने पर पहले दिन से दीक्षा-दिवस तक प्रतिदिन एक एकाशन, एक आयंबिल, एक उपवास की लड़ी प्रारम्भ की गई, जो निरन्तर चली। 19 जनवरी को रविवार होने से 20 वर्ष पूर्व सन् 2000 से आचार्य भगवन्त की सत्प्रेरणा से चल रहे भाऊ मण्डल की पूर्व जैसी उपस्थिति देखने की सन्तों द्वारा प्रेरणा कर रविवार को 750 भाई-बहनों ने सामायिक-आराधना में भाग लिया। सामायिक सूत्र के नौवें पाठों पर विवेचन प्रवचन के माध्यम से चला। प्रतिदिन 700-800 की उपस्थिति रही। साथ ही रात्रि में 8.00 से 9.15 बजे तक भाईयों के लिए युवाशाला रही, जिसमें लगभग 50 से ऊपर भाईयों ने उपस्थिति दर्ज कराई।

महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा. आदि ठाणा 5, महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा 5, महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 3, महासती श्री पदम्प्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4, महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 4 कुल ठाणा 21 नन्दुरबार, जलगांव, कजगांव, अमलनेर, धुलिया, खानदेश के पांचों स्थानों पर यशस्वी चातुर्मास सम्पन्न कर, विभिन्न ग्राम-नगरों को फरसते हुए जलगांव पधारे।

मुमुक्षु बहिन की दीक्षा के प्रसंग पर 25 जनवरी से कार्यक्रमों की शुरुआत हुई। सभी कार्यक्रमों में श्रावकों के साथ श्राविकाओं की भी अच्छी उपस्थिति रही।

सन्त रत्न श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने रत्नसंघ की गरिमामय परम्परा का

ध्यान रखते हुए, तपस्वीराज पूज्य श्री कानमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 4 एवं अरिहंत मार्गी परम्परा के सन्त पूज्य श्री धर्मेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा को दीक्षा पर उपस्थिति हेतु स्वयं पधारकर आने की विनती की।

रत्नसंघ परम्परा की उदारता से संघ में खुशी का माहौल देखने को मिला। पूज्य श्री मनीषमुनिजी म.सा. की समय सूचकता, प्रेमभाव, स्फूर्ति, शीघ्र निर्णय की क्षमता से पूरा संघ आश्चर्यान्वित हुआ। 1. चतुर्विध संघ का सान्निध्य, 2. वयोवृद्ध तपस्वी सन्त श्री कानमुनिजी म.सा. स्वयं पधारे, 3. मंच पर 7 संत 21 सतियाँजी म.सा., 4. कार्यक्रम बिलकुल समय पर, 5. दीक्षा में 3000 से ऊपर की उपस्थिति सराहनीय रही।

आचार्य भगवन्त श्री हस्तीमलजी म.सा. के 100 वीं दीक्षा-दीवस पर 101 तेले की मांग को भी संघ ने 108 के ऊपर तेले पूर्ण कर पूरा किया।-मनोज संचेती

जलगांव एवं जयपुर में जैन भागवती दीक्षा

सानन्द सम्पन्न

रत्नसंघ के अष्टम पट्टधर, जिनशासन गौरव, आगमज्ञ, प्रवचन-प्रभाकर, परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के मंगल आशीर्वाद से खानदेश के मुकुटमणि जलगांव में मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत की जैन भागवती दीक्षा श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन मुखारविन्द से एवं गुलाबीनगरी जयपुर में मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत की जैन भागवती दीक्षा साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. के पावन मुखारविन्द से 29 जनवरी, 2020 को सानन्द सम्पन्न हुई।

जलगांव दीक्षा के अवसर पर श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 के साथ ही विदुषी महासती श्री सौभाग्यवतीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विमलेशप्रभाजी म.सा., महासती श्री पदम्प्रभाजी म.सा., महासती श्री शिक्षाश्रीजी म.सा. आदिठाणा 21 विराजमान थे।

जयपुर दीक्षा के अवसर पर साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 11, व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा. आदि ठाणा 9 एवं व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा 4 विराजमान थे।

दोनों ही स्थानों पर मुमुक्षु बहिनों की भव्य शोभायात्रा निकाली गई, तत्पश्चात् मुमुक्षु बहिनों एवं वीर परिवारों का 28 जनवरी, 2020 को संघ की ओर से अभिनन्दन कार्यक्रम आयोजित किया गया। जिसकी संक्षिप्त रिपोर्ट इस प्रकार हैं:-

शोभायात्रा

जलगांव:– 28 जनवरी, 2020 को प्रातः 8.30 बजे मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत की शोभायात्रा नयन तारा शौरुम, सुभाष चौक से प्रारम्भ हुई। शोभायात्रा का विहंगम परिदृश्य जलगांव के सम्पूर्ण जैन समाज की एकता को परिलक्षित कर रहा था। मुमुक्षु बहिन हाथी पर सवार होकर सभी का अभिनन्दन कर रही थी। साथ चल

रहें वीर परिवार के सदस्यों की प्रसन्नता उनके मुखमण्डल से बयां हो रही थी। सफेद गणवेश में श्रावकवर्ग एवं लाल चुंदड़ी में श्राविकावर्ग स्वानुशासन के साथ चल रहे थे। दीक्षा के महत्त्व को दर्शाते हुए भजनों की स्वर लहरियाँ एवं नारे वातावरण को संयम की सुगन्ध से सुरभित कर रहे थे। जलगांव के निर्धारित मुख्य मार्गों से होती हुई शोभायात्रा गणपति नगर स्थित स्वाध्याय भवन पहुँची, जहाँ मुमुक्षु बहिन एवं जन समुदाय ने श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. के मुखारविन्द से मांगलिक श्रवण की।

जयपुरः— 28 जनवरी, 2020 को प्रातः 9.30 बजे मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत की भव्य शोभायात्रा वीर परिवार के अस्थायी निवास से निकलकर स्वाध्याय भवन में विराजित महासती मण्डल के मांगलिक श्रवण कर प्रारम्भ हुई। बैण्ड बाजों की मधुर ध्वनि, भजन मण्डली के संयम गीत तथा श्रावक-श्राविकाओं के द्वारा गुंजित नारें शोभायात्रा की शोभा को बढ़ा रहे थे। शोभायात्रा में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-जयपुर, श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संस्था, सांगानेर-प्रतापनगर के श्रावक-श्राविकाएँ, युवक परिषद् के सभी युवा साथी, बालिका मण्डल की बालिकाएँ अपनी निर्धारित एक-सी वेशभूषा के साथ व्यवस्था को निरन्तर संभाल रहे थे। जयपुर के प्रतापनगर क्षेत्र में ऐसा भव्य नजारा संभवतः पहली बार ही देखने को मिल रहा था। सुसज्जित बग्गी में मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत सभी का अभिवादन कर रही थी। मार्ग के दोनों ओर खड़े अनेक लोगों ने शोभायात्रा का भव्य नजारा देखा तथा विरक्ता बहिन के प्रसन्नचित्त मुख मण्डल को निहारते हुए संयम जीवन की शुभकामना स्वरूप आशीर्वाद प्रदान किया। देश के विभिन्न प्रांतों से श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाएँ संयम की अनुमोदना करने हेतु इस पावन अवसर पर उपस्थित हुए।

अभिनन्दन—समारोह

जलगांवः— शोभायात्रा के पश्चात् दोपहर 2.00 बजे वीर परिवार एवं मुमुक्षु बहिन के अभिनन्दन हेतु अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा अभिनन्दन समारोह आयोजित किया गया। अभिनन्दन समारोह की अध्यक्षता शासन सेवा समिति के संयोजक एवं जलगांव के प्रतिष्ठित श्रावक रत्न श्रीमान् रतनलाल जी बाफना ने की। महाराष्ट्र विधान सभा के पूर्व अध्यक्ष माननीय श्रीमान् अरुणभाई गुजराती-चौपड़ा ने मुख्य अतिथि के रूप में पधार कर समारोह की शोभा बढ़ाई। विशिष्ट अतिथि के रूप में संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक, संघसेवा शिरोमणि श्रीमान् मोफतराजजी मुणोत, संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष श्री बुधमलजी बोहरा ने पधारकर मंच को शोभायमान किया। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-जलगांव द्वारा आगन्तुक अतिथियों का माला, शॉल एवं स्मृति चिह्न प्रदान कर बहुमान किया गया। वीर माता-पिता सहित वीर परिवार के सदस्यों का स्वागत करने के साथ ही संघ द्वारा रजत पट्टिका प्रदान कर अभिनन्दन किया गया। मंचस्थ अतिथियों एवं संघ पदाधिकारियों द्वारा मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत का स्वागत कर अभिनन्दन-पत्र समर्पित किया गया। मुमुक्षु बहिन ने अपने

उद्गार व्यक्त करते हुए संयम के महत्त्व को प्रदर्शित किया। जीवन के विभिन्न संस्मरणों के माध्यम से उन्होंने अपने जीवन में आयी वैराग्य भावना के बारे में बताया। वीर परिवार द्वारा भी अपनी भावना व्यक्त कि गई तथा मुमुक्षु बहिन के निराबाध संयम जीवन की कामना की।

अतिथिगणों ने अपने उद्बोधनों में संयम के प्रति मुमुक्षु बहिन के उच्च भाव एवं उत्साह की प्रशंसा की।

जयपुरः— मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत की भव्य शोभायात्रा प्रतापनगर क्षेत्र के विभिन्न मार्गों से होती हुई 11.30 बजे अभिनन्दन स्थल पर पहुँची। अपार जनसमूह ने कार्यक्रम स्थल पर पहुँचकर निर्धारित स्थान ग्रहण किया। भव्य पांडाल भी जनसमूह के समक्ष छोटा प्रतीत हुआ। मुमुक्षु बहिन एवं वीर परिवार के सदस्यों ने निर्धारित मंच पर अपना स्थान ग्रहण किया। संचालक महोदय ने कार्यक्रम को प्रारम्भ करते हुए रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्रीमान् प्रकाशजी टाटिया को अध्यक्षता करने हेतु मंच पर आमंत्रित किया। मुख्य अतिथि के रूप में राजस्थान उच्च न्यायालय के पूर्व न्यायाधिपति श्रीमान् जसराज सा चौपड़ा, विशिष्ट अतिथि के रूप में श्रीमान् जयपुर शहर सांसद श्रीमान् रामचरणजी बोहरा, सांगानेर विधानसभा क्षेत्र के विधायक श्रीमान् अशोकजी लाहोटी तथा संघ संरक्षक श्रीमान् विमलचन्द सा डागा ने मंच को सुशोभित किया।

मंगलाचरण एवं स्वागत गीत के पश्चात् प्रतापनगर संघ के अध्यक्ष डॉ. जितेन्द्रसिंहजी कोठारी ने आगन्तुक अतिथियों, वीर परिवार तथा देश के विभिन्न प्रान्तों से पधारे हुए श्रद्धालुजनों का शब्दों से स्वागत किया। उन्होंने आचार्यप्रवर के प्रति कृतज्ञता ज्ञापित की कि भगवन्त ने महती कृपा कर प्रतापनगर संघ को यह पावन पुनीत अवसर प्रदान किया। संघ द्वारा पधारे हुए सभी अतिथिगणों का माला, शॉल, साफा तथा स्मृति चिह्न प्रदान कर बहुमान किया गया। प्रतापनगर संघ द्वारा संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया का भी बहुमान किया गया। वीर दादीजी श्रीमती सूरजबाईजी मुणोत, वीरपिता श्री कुन्दनमलजी मुणोत, वीरमाता श्रीमती कमलेशजी मुणोत, वीरभ्राता श्री प्रियांशजी मनीषजी मुणोत का संघ द्वारा स्वागत कर रजत पट्टिका पर अंकित प्रशस्ति-पत्र भेंट किया गया। वीर परिवार की ओर से भ्राता श्री प्रियांशजी मुणोत ने अपनी भावना व्यक्त करते हुए मुणोत परिवार की ओर से अपनी बहिन को शुभकामना देते हुए सुन्दर संयमी जीवन की कामना की। मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत को दिये जाने वाले अभिनन्दन-पत्र का वाचन जिनवाणी के सम्पादक डॉ. धर्मचन्दजी जैन द्वारा किया गया। संघ द्वारा मुमुक्षु बहिन का माला एवं चुंदड़ी से अभिनन्दन करते हुए मंचासिन अतिथियों द्वारा अभिनन्दन-पत्र समर्पित किया गया। संघ की जयपुर शाखा एवं प्रतापनगर संघ द्वारा भी मुमुक्षु बहिन का स्वागत अभिनन्दन किया गया। न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया ने अपना अध्यक्षीय उद्बोधन प्रस्तुत करते हुए संयमियों के जीवन से प्रेरणा लेने की बात कही। अतिथिगणों ने भी अपने आशीर्वचन में मुमुक्षु बहिन को संयम मार्ग पर

सफलतापूर्वक आगे बढ़ने की भावना व्यक्त की। मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत ने अपने उद्‌गार व्यक्त करते हुए आचार्यप्रवर, संत मण्डल, साध्वीप्रमुखाजी, अपनी दोनों भुआ म.सा. सहित समस्त महासती मण्डल की महती कृपा हेतु कृतज्ञता ज्ञापित की। संघ के राष्ट्रीय कार्यध्यक्ष श्रीमान् आनन्द सा चौपड़ा ने आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष पर संघ द्वारा निर्णित कार्यक्रम की रूपरेखा प्रस्तुत की। कार्यक्रम का सफलतापूर्वक संचालन संघ के राष्ट्रीय मंत्री श्रीमान् राजेन्द्रजी जैन 'राजा' ने किया। संघ महामंत्री श्री धनपतजी सेठिया द्वारा सभी आगन्तुकों का आभार व्यक्त किया गया।

दीक्षा–महोत्सव

जलगांव:– 29 जनवरी, 2020 का पावन दिवस मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत की संयम यात्रा का प्रथम दिवस था। परिवार से विदाई प्राप्त कर प्रातः 9.30 बजे मुमुक्षु बहिन की अभिनिष्क्रमण यात्रा प्रारम्भ होकर रतनलाल सी. बाफना स्वाध्याय भवन, गणपतिनगर पहुँची, जहाँ श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. एवं महासती मण्डल पूर्व में ही पधार कर भक्तजनों को जिनवाणी का रसपान करवा रहे थे। इस अवसर पर जलगांव में विराजित वयोवृद्ध तपस्वी संत श्री कानमुनिजी म.सा., अरिहन्त मार्गी संत पूज्य श्री धर्मेशमुनिजी म.सा. भी अपने संत मण्डल के साथ दीक्षा महोत्सव पर उपस्थित हुए।

मुमुक्षु बहिन ने संत-सतीवृन्द को वन्दना की तत्पश्चात् मांगलिक श्रवण कर वेश परिवर्तन हेतु प्रस्थान किया। महासती मण्डल एवं संतवृन्द ने उपस्थित श्रद्धालु श्रावक-श्राविकाओं को संयम की महत्ता बताते हुए गृहस्थ जीवन से संत जीवन प्राप्त कर मोक्ष की ओर आगे बढ़ने की प्रेरणा प्रदान की। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने प्रवचन में फरमाते हुए कहा की आज इस महोत्सव में हम 7 संत एवं 21 महासतियाँजी उपस्थित है तथा 1 मुमुक्षु बहिन की दीक्षा होने जा रही है। इस तरह से कुल योग 29 बन रहा है, और संयोग से आज की तारीख भी 29 ही है। उन्होंने फरमाया कि मोक्ष मार्ग पर आगे बढ़ने के लिए संयम ग्रहण करना आवश्यक है। वैराग्य भाव को जाग्रत कर जो लोग संयम ग्रहण कर सके, वे अवश्य आगे बढ़े। अन्य सभी संयम एवं संयमियों की अनुमोदना करने में पीछे न रहें।

मुमुक्षु बहिन वेश परिवर्तन के पश्चात् जैसे ही दीक्षा-स्थल पर पहुँची, जय-जयकारों से पांडाल गुंजायमान हो गया। मुमुक्षु बहिन ने सभी महापुरुषों को वंदना कर उपस्थित चतुर्विध संघ तथा वीर परिवार के सदस्यों से क्षमायाचना की। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने वीर परिवार एवं संघ पदाधिकारियों से आज्ञा लेकर मुमुक्षु बहिन को करेमि भंते के पाठ से दीक्षा प्रदान की। जैसे ही दीक्षा पाठ दिया गया, उपस्थित जनसमुदाय ने आचार्य भगवन्त, उपस्थित संत-सतीवृन्द की जय के साथ नवदीक्षित साध्वीजी का भी जयकार किया।

दीक्षा महोत्सव पर लगभग 3000 श्रावक-श्राविकाओं ने पहुँचकर दीक्षा की अनुमोदना की। श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ-जलगांव, श्री जैन रत्न

हितैषी श्रावक संघ-जलगांव, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् के कार्यकर्त्ताओं ने दीक्षा महोत्सव की सम्पूर्ण व्यवस्था में अपना महनीय योगदान प्रदान किया। दीक्षा हेतु आवास-निवास भोजन की एवं आवागमन की व्यवस्था श्री रतनलाल सी. बाफणा परिवार द्वारा की गई।-कंवरलाल संघवी, अध्यक्ष

जयपुरः— जैनाचार्य पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. की आज्ञा से रत्नसंघ की बगिया में नये फूल के रूप में मुमुक्षु बहिन सुश्री दीपिकाजी मुणोत की जैन भागवती दीक्षा सांगानेर-प्रतापनगर के भव्य पांडाल में असंख्य जनमेदिनी के उत्साह के साथ सानन्द सम्पन्न हुई। आचार्य हीरा की आज्ञानुवर्तिनी साध्वीप्रमुखा विदुषी महासती श्री तेजकंवरजी म.सा. ने अपने मुखारविन्द से मुमुक्षु बहिन को दीक्षा पाठ प्रदान किया।

9 वर्ष की वैराग्यवधि से परिपुष्ट हुई मुमुक्षु बहिन की दीक्षा से पूर्व प्रातः 9.00 बजे महाभिनिष्क्रमण यात्रा वीर परिवार के अस्थायी निवास स्थान से प्रारम्भ होकर महासती वृन्द के चरणों में पहुँची। मांगलिक श्रवण करने के पश्चात् मुमुक्षु बहिन मुंडन तथा वेश परिवर्तन हेतु निर्धारित स्थान पर पहुँची।

इधर दीक्षा स्थल पर साध्वीप्रमुखा जी के साथ ही व्याख्यात्री महासती श्री ज्ञानलताजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री मुक्तिप्रभाजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री सुमनलताजी म.सा. सहित सती-मण्डल ने उपस्थित जनमेदिनी को संयम की महिमा का बखान करते हुए संयम-मार्ग अपनाने की प्रेरणा प्रदान की। महासती श्री भाग्यप्रभाजी म.सा., महासती श्री दिव्यप्रभाजी म.सा. तथा महासती श्री कोमलश्रीजी म.सा. ने भी संयम की महत्ता पर प्रकाश डाला।

साध्वी वेश को धारण कर मुमुक्षु बहिन दीक्षा स्थल पर महासतीवृन्द के चरणों में पहुँची। मुमुक्षु बहिन के दीक्षा स्थल पर पहुँचते ही उपस्थित जनमेदिनी ने जय-जयकारों का नाद किया। मुमुक्षु बहिन ने साध्वीप्रमुखा सहित सभी महासतीवृन्द को तिक्खुत्तों के पाठ से तीन बार वन्दना की तथा अपने पारिवारिक परिजनों, संघ पदाधिकारियों एवं उपस्थित श्रावक-श्राविकाओं से क्षमायाचना की। पारिवारिक परिजनों तथा संघ पदाधिकारियों से आज्ञा प्राप्त करने के पश्चात् साध्वीप्रमुखाजी के मुखारविन्द से ''करेमि भंते'' के पाठ से दीक्षा अंगीकार कर मुमुक्षु बहिन महासती बन गई तथा उपस्थित जनसमूह के लिए वन्दनीय तथा पूजनीय बन गई। श्रावक-श्राविकाओं ने महापुरुषों तथा महासतीवृन्द की जय के साथ नवदीक्षित साध्वीजी का भी जय-जयकार किया। दीक्षा अवसर पर मुमुक्षु बहिन के वीर पिता श्रीमान् कुन्दनमल जी मुणोत, वीरमाता श्रीमती कमलेशजी मुणोत ने साध्वीप्रमुखाजी के मुखारविन्द से सजोड़े आजीवन शीलव्रत अंगीकार किया। साथ ही वीर पिता श्री कुन्दनमलजी के मामाजी श्रीमान् गणपतलालजी सुराणा एवं मामीजी श्रीमती भीखीदेवीजी सुराणा ने भी दीक्षा के पावन प्रसंग पर आजीवन शीलव्रत के प्रत्याख्यान ग्रहण किए।

दीक्षा प्रसंग पर अनुमोदना करने हेतु पूर्व न्यायाधिपति श्री जसराजजी चौपड़ा, राजस्थान मानवाधिकार आयोग के पूर्व अध्यक्ष व रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष

न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया, श्री सुमेरसिंहजी बोथरा, श्री कैलाशजी हीरावत, श्री विमलचन्दजी डागा सहित संघ के कई शीर्षस्थ पदाधिकारी उपस्थित थे।

श्री श्वेताम्बर स्थानकवासी जैन संस्था-प्रतापनगर, श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-जयपुर, श्राविका मण्डल, युवक परिषद् एवं युवती मण्डल के सभी कार्यकर्त्ताओं ने दीक्षा की अनुमोदना के साथ ही सम्पूर्ण व्यवस्था में दिन-रात एक कर भरपूर सहयोग प्रदान किया।

राजस्थान के लगभग सभी ग्राम-नगरों के साथ ही देश के लगभग सभी प्रान्तों के श्रावक-श्राविकाओं ने जयपुर उपस्थित होकर दीक्षा की अनुमोदना का लाभ प्राप्त किया।-सुशीलकुमार जैन, मंत्री

आचार्यश्री हस्ती दीक्षा–शताब्दी वर्ष 26 जनवरी, 2020 से हुआ प्रारम्भ

देश के विभिन्न प्रान्तों में कई कार्यक्रम आयोजित

पीपाड़ में आचार्यप्रवर के सान्निध्य में श्रद्धाभिव्यक्ति

माघ शुक्ला द्वितीया, रविवार दिनांक 26 जनवरी, 2020, स्थान कोट का प्रांगण-पीपाड़शहर में प्रतिपल स्मरणीय परमाराध्य आचार्य भगवन्त पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी म.सा. का 100 वां दीक्षा-दिवस चतुर्विध संघ की साक्षी में सामायिक-दिवस और व्रत-नियमों की श्रद्धा समर्पित करने के लक्ष्य से मनाया गया। पीपाड़शहर के आबाल-वृद्ध सभी सदस्य तो प्रवचन सभा में उपस्थित थे ही, मेड़तासिटी, कोसाना, जोधपुर, बारनी, भोपालगढ़, ब्यावर, अजमेर आदि-आदि क्षेत्रों के श्रीसंघ व श्रद्धालुओं ने गुरु हस्ती के दीक्षा-शताब्दी वर्ष के शुभारम्भ पर अपनी श्रद्धाभिव्यक्ति करने के प्रयोजन से पीपाड़ पहुँचकर सामायिक-साधना और उपवास-आयंबिल- एकासन की तप-साधना में भाग लिया। संघ-सेवा शिरोमणि संघ संरक्षक मण्डल के संयोजक श्री मोफतराजजी मुणोत, रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष जस्टिस श्री प्रकाशजी टाटिया, संघ महामंत्री श्री धनपतजी सेठिया आदि-आदि अनेक संघ पदाधिकारीगण भी गुरु हस्ती दीक्षा-शताब्दी वर्ष के शुभारम्भ पर उपस्थित थे।

प्रातः करीब 9.15 बजे तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री कल्पेशमुनिजी म.सा. आदि संत-मुनिराज कोट में पधारे। संत-मुनिराजों के आगमन के पश्चात् व्याख्यात्री महासती श्री सोहनकंवरजी म.सा., सेवाभावी महासती श्री विमलावतीजी म.सा., व्याख्यात्री महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. आदि ठाणा का भी प्रवचन-सभा में पधारना हुआ।

तत्त्वचिन्तक श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. ने नमस्कार महामंत्र के अनन्तर प्रार्थना करवाई, सुज्ञ श्रावकों ने प्रार्थना में समवेत स्वर में एक-एक कड़ी का श्रद्धा-भक्ति के साथ उच्चारण कर अपनी जिह्वा पावन की। तत्त्वचिन्तक मुनिश्री ने आराध्य आचार्यदेव के विशिष्ट गुणों का वर्णन करते प्रेरणारूप संदेश दिया कि

अहंकार से ऊपर उठने वाला ही साधक बनता है। हम गुरु हस्ती के गुणगान गाएं वह तो ठीक लेकिन गुरु के गुण ग्रहण करने की कितनी तैयारी है, हम सबको इस पर विचार करना है।

तत्त्वचिन्तक मुनिश्री के पश्चात् श्रद्धेय श्री कल्पेशमुनिजी म.सा. ने -''सिद्धों की आत्मा से मेरा तार जुड़ गया'' बोल में भजन की प्रस्तुति दी। मुनिश्री का कण्ठ सुरीला है, आवाज भी दूर तक पहुँचती है अतः पूरे प्रांगण में शांति छा गई।

श्रद्धेय श्री अशोकमुनिजी म.सा. ने अपने विचार रखते कहा कि पानी बहकर समुद्र में जाता है उसे तो बांध बनाकर रोका जा सकता है लेकिन समय को रोकना किसी के लिए न संभव हुआ है और न ही संभव होगा। पुण्य धरा पीपाड़ में जन्में गुरु हस्ती के व्यक्तित्व-कृतित्व की संक्षिप्त झांकी रखते हुए मुनिश्री ने कहा-''मिश्री को चाहे जिधर से खाएं वह तो मीठास देने वाली है ठीक इसी तरह गुरु हस्ती के जिन-जिन गुणों का कथन करें, गुण प्रेरणा देने वाले ही हैं। श्रद्धेय श्री विनम्रमुनिजी म.सा. ने संस्कृत में स्वरचित गुरु हस्ती अष्टकम् का लयबद्ध उच्चारण अर्थ सहित करते हुए गुरु हस्ती के जीवन व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला।

महासती श्री सिद्धिप्रभाजी म.सा. ने एवं महासती श्री विनीतप्रभाजी म.सा. ने भी गुरु हस्ती के दीक्षा शताब्दी के शुभारम्भ पर अपनी-अपनी शुभभावना व्यक्त की।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. ने गुरु शब्द की व्याख्या करने के साथ गुरु के उपकारों का स्मरण तो किया ही, गुरु का त्रैकालिक अस्तित्व का बखान भी किया। गुरु हस्ती की मस्ती के कतिपय दृष्टान्त रखते हुए मुनिश्री ने यह भी कहा कि आप चर्चा करें। चर्चा से चर्या और चर्या से चारित्र बनता है। मुनिश्री ने लोकमान्य कुछ दोहे तो कहे ही, कबीरदासजी का दोहा भी जन समुदाय के समक्ष रखा। माता-पिता की भक्ति से भाग्य बनता है तो गुरु की भक्ति भगवान बनाती है; कहावत का हार्द समझाया। मुनिश्री ने गुरु हस्ती की साधना का उल्लेख करते कहा कि महान् साधक बाहर में देह से तो भीतर में मोह से युद्ध कर रहा था। मुनिश्री ने आचार्य की सेवा का गच्छ की सेवा बताते हुए सेवा-धर्म की साधना में शक्ति का उपयोग करने का आह्वान किया।

मधुरव्याख्यानी श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा. का प्रवचन चल रहा था कि कोट के मुख्यद्वार से आवाज कर्णगोचर हुई- पधारजे अन्नदाता खम्मा घणी। आचार्यश्री हस्तीमलजी म.सा. की जय, गुरु हस्ती पट्टधर गुरु हीरा की जय, जय-जयकार के जयनाद श्रवण करते ही जन समुदाय ने खड़े होकर एवं हाथ जोड़कर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का स्वागत किया तो बहिनों ने समवेत स्वर में भजन की चन्द पंक्तियों के माध्यम से गुरुदेव के पधारने पर अपना हर्ष व्यक्त किया।

वन्दन-नमन के अनन्तर आचार्य श्री हीरा के विराजने के लिए पाटे पर चौकी लगाई गई जहाँ पूज्य श्री विराजे तो श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री गौतममुनिजी म.सा., श्रद्धेय श्री प्रमोदमुनिजी म.सा. पाट पर एवं शेष सभी संत-मुनिराज

नीचे विराजे।

महान् अध्यवसायी श्रद्धेय श्री महेन्द्रमुनिजी म.सा. को बोलना था, किन्तु उन्होंने यह कहकर कि मैं तो प्रायः आपको सुनाता ही हूँ, मैं बोलू या पूज्य गुरुदेव बोले आप जिन्हें भी सुनना चाहें तो हम वैसा कर सकते हैं। मुनिश्री ने यह भी कहा कि हमारा सौभाग्य है कि गुरुदेव अपने गुरु के दीक्षा-दिवस पर हमारे बीच पधारे हैं तो आप-हम गुरुदेव के मुखारविन्द से सुनें, यही श्रेष्ठ रहेगा।

आचार्य श्री हीरा का मंगल उद्बोधन

सौभाग्य है पीपाड़वासियों का। यहाँ आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज) की जन्म-शताब्दी महोत्सव मनाने का सुयोग भी आपको मिला। जन्म-शताब्दी पर कागजों का प्रचार अधिक था, दीक्षा शताब्दी कहने का नहीं, करने का समय होता है। संघ ने भी करने की बात पर बल दिया है। आप ज्ञान करना चाहें तो आवश्यक-सूत्र का ज्ञान करें। सब काम छोड़कर जिसे पहले किया जाता है, वह आवश्यक काम होता है।

आवश्यक है- अशुचि का निवारण। आप सुन्दरता के लिए शृंगार और साज-सज्जा तो बाद में भी कर सकते हैं लेकिन पहले आवश्यक है- अशुचि का निवारण। आवश्यक है दोषों का निकन्दन। आवश्यक है- पाप का प्रक्षालन। आवश्यक है पाप से निवृत्ति और आवश्यक है दोष से मुक्ति। मैं यहाँ संख्या की बात नहीं कर रहा हूँ। हर व्यक्ति यह सोचकर चले कि मेरे जीवन की शुद्धि कैसे हो? क्यों? तो हर व्यक्ति को अपनी शुद्धि करनी होती है। शुद्धि करने वाले लोग शुद्धि करते हैं। कई रिवाज से शुद्धि करते हैं तो कई लाइसेंस रिन्यू करने के लक्ष्य से शुद्धि करते हैं तो कई समझ बढ़ाने के लिए भी शुद्धि करते हैं। आप कैसे भी शुद्धि करें, शुद्धि करना आवश्यक है।

आप आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव श्री हस्तीमलजी महाराज) के दीक्षा-शताब्दी वर्ष के शुभारम्भ से यह संकल्प करें कि हमें अपने दोषों की शुद्धि करनी है। जिन्हें प्रतिक्रमण याद नहीं वे एक-एक लाइन भी याद करेंगे तो शताब्दी वर्ष में प्रतिक्रमण कण्ठस्थ हो जाएगा। जिन्हें प्रतिक्रमण याद है, वे अर्थ-भावार्थ समझें। क्यों? तो शुद्धि के लिए प्रतिक्रमण आवश्यक है। प्रतिक्रमण में दोषों की शुद्धि की जाती है, पाप से हटा जाता है।

पहली बात है- प्रतिक्रमण तो दूसरी बात हैं- सामायिक। दीक्षा जीवन भर की सामायिक है। आपकी सामायिक देशकालिक है। देश सामायिक एक घण्टे की हो सकती है तो ज्यादा भी की जा सकती हैं। आप सामायिक करें, नित्यप्रति सामायिक करें। मैंने उपाध्यायप्रवर की गुणानुवाद-सभा के दिन कहा था- ''हमारे में भी उपाध्यायप्रवर जैसी समता का संचार हो। समता का संचार कैसे? रेत का संचार होता है तो हवा का भी संचार होता है। पानी का संचार भी आपने देखा होगा। क्या कभी आपने अपना संचार देखा है? आप ठण्डे हैं या गर्म? आप जानते हैं कि आदमी क्रोध में गर्म होता है जबकि खुशी में-शांति में आदमी ठण्डा रहता है। समता वाला सिद्धि

पाएगा ही, ऐसा नहीं कहा जा सकता। बहुत बार समता वाला सिद्धि पाने से रह जाता है तो उसमें किसी को आश्चर्य करने की बात नहीं। क्यों? तो सामायिक में समता है लेकिन घर जाते ही वह समता न जाने कहाँ चली जाती है? सामायिक में समता है पर दुकान पर चढ़ते ही वह समता क्यों नहीं रहती?

आप आचार्य भगवन्त (पूज्य गुरुदेव) का जीवन तो देखो। चार घरों में वह एकाकी लाडला था। एकाकी होते हुए भी उसने मात्र दस वर्ष की अवस्था में दीक्षा ले ली। आज, जिनके चार-चार लड़के हैं, चार में से किसी एक को दीक्षित करने का कहो तो.....? है कोई, यह कहने वाला कि मेरे एक लड़के को आप दीक्षित करो। कभी-कोई संत-सतीवृन्द के सान्निध्य में आता-जाता हो तो भी हलचल मच जाती है।

आचार्य भगवन्त ने दीक्षा ली। वे अपनी मातुश्री के साथ दीक्षित हुए। माँ ने दीक्षा में सहयोग किया। आज की ये माताएँ क्या कहती है? कितना सहयोग करती है? आप अपना चिन्तन करना। मैं खेद के साथ कह रहा हूँ। क्यों? तो मैं पीपाड़ में जन्मा हूँ। मैंने जब से होश संभाला, राता उपासरा देखा है। राता उपासरा कभी खाली नहीं रहा। कोई-न- कोई उपासरे में सामायिक करते मिलता तो कोई प्रतिक्रमण करते। सामायिक- प्रतिक्रमण, दया-संवर, उपवास-पौषध करते-करते कोई-न-कोई जरूर दिखाई देता। मैंने राता उपासरा कभी खाली नहीं देखा, आज क्या स्थिति है? आज सामायिक करने वाले सामायिक तो करते हैं, पर घर पर करते हैं। घर की सामायिक में कभी दूध वाला तो कभी पानी वाला आता है, कभी बच्चा रोता है तो कभी कोई बुलाने वाला भी आ सकता है। कोई-न-कोई नहीं तो आपकी फोन की घण्टी बजती है, मोबाइल पर मैसेज आता है। घर के बजाय धर्मस्थान में सामायिक हो। पहले इसी पीपाड़ में चाहे कांकरियाजी हो, मुणोतजी, चाहे गांधीजी हो या चौधरीजी हर कोई उपासरे में आकर सामायिक-प्रतिक्रमण, दया-संवर, उपवास-पौषध करता।

कमाई करने के लिए दुकान है तो धर्म-साधना करने के लिए धर्मस्थान क्यों नहीं? आप आचार्य भगवन्त की दीक्षा-शताब्दी वर्ष में धर्मस्थान में सामायिक प्रारम्भ करें। सामायिक समता के लिए हो, सम्मान बढ़ाने के लिए हो और संतोष की भावना पैदा करने के लिए हो। आप सामायिक-प्रतिक्रमण याद करें और जिन्हें याद हैं वे अर्थ-भावार्थ समझें। आप आवश्यक-सूत्र की परीक्षा दें तो आपका दीक्षा-शताब्दी वर्ष मनाया सार्थक होगा।-नौरतनमल मेहता

आणंद (गुजरात)– अध्यात्मयोगी आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 100 वां दीक्षा-दिवस सेवाभावी श्रद्धेय श्री नंदीषेणमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में 26 जनवरी, 2020 को तप-त्याग एवं दो-दो सामायिक की आराधना के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में अहमदाबाद, आणंद एवं पालनपुर के अनेक श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। अहमदाबाद से आए श्रावकों ने हस्ती चालीसा एवं गुरु गुणगान के भजनों का उच्चारण किया। विराजित संतों ने गुरुदेव की जीवनी पर प्रकाश डाला। साथ ही नित्य सामायिक-स्वाध्याय की सभी को प्रेरणा की। श्री पदमचन्दजी कोठारी ने आचार्य भगवन्त के जीवन के विशेष प्रसंगों का विवरण प्रस्तुत करते हुए जैन धर्म का

मौलिक इतिहास सभी को स्वाध्याय करने की प्रेरणा देते हुए सभी को घर में प्रार्थना, सामायिक-स्वाध्याय करने की भी प्रेरणा की। कार्यक्रम में अहमदाबाद से 25 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहीं। इस प्रसंग पर 10 एकासन एवं 1 आयंबिल के प्रत्याख्यान हुए। आणंद संघ के उपाध्यक्ष ने सभी का आभार प्रकट किया एवं गुरुदेवों को शेषकाल विराजने की विनंती की।

जोधपुर– अध्यात्मयोगी आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 100 वां दीक्षा-दिवस प्रतापनगर-जोधपुर में परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर 1008 श्री हीराचन्द्रजी म.सा. के सुशिष्य श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सानिन्ध्य में त्याग-तप एवं धर्माराधनापूर्वक मनाया गया। प्रातःकाल रविवारिय सामूहिक-सामायिक व्रत की आराधना का कार्यक्रम रखा गया, जिसमें लगभग 250 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रहीं। तत्पश्चात् प्रवचन सभा का शुभारम्भ श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. के मंगलाचरण से हुआ। श्रद्धेय श्री यशवन्तमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि संयम की साधना से ही जीव सिद्धि को प्राप्त करता है। संवर से कर्मों का आवागमन रूकता है और संयम से मुक्ति प्राप्त होती है। श्रद्धेय श्री योगेशमुनिजी म.सा. ने प्रवचन फरमाते हुए कहा कि पूज्य गुरुदेव की मैं तीन विशेषताएँ आपके सामने रख रहा हूँ- आचार्य श्री युगदृष्टा थे, भविष्यदृष्टा थे तथा आत्मदृष्टा थे। आचार्यश्री के जीवन को शब्दों में बांधना बहुत ही मुश्किल है। इस अवसर पर कतिपय श्रावक-श्राविकाओं ने भी अपने उद्गार व्यक्त किए। इस पावन प्रसंग पर एकासन, उपवास, आयंबिल, नींवी, बेले-तेले की आराधना हुई। प्रवचन सभा में अच्छी उपस्थिति रहीं। कार्यक्रम के सफल आयोजन में प्रतापनगर संघ, युवक परिषद् एवं श्राविका मण्डल का अपूर्व सहयोग रहा।-सुभाष गुन्देचा, अध्यक्ष

चैन्नई (तमिलनाडू)– जैनाचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 100 वां दीक्षा-दिवस 26 जनवरी, 2020 को व्याख्यात्री महासती श्री इंदुबालाजी म.सा. आदि ठाणा 10 के पावन सान्निध्य एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ-तमिलनाडु के तत्त्वावधान में जैन भवन, साहूकार पेठ में मनाया गया। सामायिक-साधना करते हुए श्रद्धालु भक्तों ने महासती मण्डल के मुखारविन्द से आराध्य गुरु हस्ती के गुणों एवं जीवन की अनेक घटनाओं को श्रवण किया। समारोह में संघ एवं समस्त सम्प्रदायों तथा संस्थाओं के अनेक प्रमुख श्रद्धालु भक्तों ने आचार्य भगवन्त के गुणगान करते हुए अपने अहोभाव प्रकट किये। दीक्षा शताब्दी दिवस के इस पावन प्रसंग पर तप-साधकों ने एकासन-बियासना, नींवी, आयम्बिल, उपवास, रात्रिसंवर आदि व्रत-प्रत्याख्यान महासती मण्डल के श्रीमुख से ग्रहण किए। इस कार्यक्रम में लगभग 1100 श्रावक-श्राविकाओं एवं युवक-युवतियों का प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सराहनीय सहयोग रहा। समारोह की सम्पूर्ण व्यवस्था श्रीमान झूमरमलजी, राजेन्द्रकुमारजी, किशोरकुमारजी, करणजी बाघमार (मरुधर में कोसाना) की ओर से की गई।

बैंगलुरु (कर्नाटक)– श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ (कर्नाटक) के तत्त्वावधान में एवं श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ ट्रस्ट (कर्नाटक) बैंगलुरु, श्री जैन रत्न श्राविका

मण्डल (कर्नाटक) बैंगलुरु एवं श्री जैन रत्न युवक परिषद् (कर्नाटक) बैंगलुरु के संयुक्त सहयोग से एच. उत्तमचन्द प्रमिला भण्डारी सामायिक-स्वाध्याय भवन, राजाजी नगर के प्रांगण में युगदृष्टा जैनाचार्य श्री हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष का भव्य शुभारम्भ दो-दो सामायिक की सामूहिक साधना व अनेक व्रत प्रत्याख्यान त्याग-तप से किया गया। अत्यन्त सादगी सौहार्दपूर्ण धार्मिक वातावरण में आचार्य श्री हस्ती की महिमा गुणगान व जीवन झांकी भी अनेक प्रबुद्ध वक्ताओं ने प्रस्तुत की। चेन्नई से पधारे मुख्य अतिथि व मुख्य वक्ता श्री कैलाशमलजी दुग्गड़ ने कहा कि आचार्य हस्ती की 81 वर्ष की दीक्षा पर्याय में उन्होंने कैसे साधना-त्याग-संयम के बल पर जैन धर्म के मौलिक इतिहास की महान् रचना की, यह प्रेरणा लेने योग्य तथ्य है। आचार्य हस्ती की समग्र जैन समाज को यह अनुपम देन है। सभा के संचालक रत्नसंघ मंत्री श्री गौतमचन्द ओस्तवाल ने आचार्य श्री हस्ती के दीक्षा शताब्दी प्रसंग पर अनेक विषयानुकूल प्रसंग व संस्मरण बखूबी प्रस्तुत किये तथा समस्त धर्म सभा को आने वाले एक वर्ष में निम्नांकित संकल्प करने की प्रारम्भिक प्रेरणा की- 1. 100 घण्टों का मौन रखना। 2. 100 सामायिक नियमित नियम के अलावा बढ़ोतरी करना। 3. 100 दिन-रात्रि भोजन का त्याग करना। 4. 100 दिन प्रतिदिन 15-15 मिनट स्वाध्याय करना आदि। इस प्रसंग पर श्रीमती सुशीलाजी भण्डारी, श्री हेमन्तजी ओस्तवाल, श्री तेजराजजी मुथा, श्री भरतजी सांखला, श्री चेतनप्रकाशजी डूंगरवाल, श्री नवरतनमल जी भंसाली, श्री शांतिलालजी डूंगरवाल आदि ने गद्य-पद्य में अपने-अपने महनीय विचार प्रस्तुत किये। मंगलपाठ श्रावकरत्न श्री शान्तिलालजी डूंगरवाल ने प्रदान किया एवं जयघोष से आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी का शुभारम्भ कार्यक्रम सम्पन्न हुआ।

-गौतमचन्द ओस्तवाल, संघमंत्री

बीजापुर (कर्नाटक)– अध्यात्मयोगी आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 100 वां दीक्षा-दिवस श्री वर्धमान स्थानकवासी जैन श्रावक संघ द्वारा 26 जनवरी, 2020 को श्रमणसंघीय उपाध्यायप्रवर, मधुरव्याख्यानी पूज्य श्री प्रवीणऋषिजी म.सा. आदि ठाणा के पावन सान्निध्य में मनाया गया। साथ ही कर्नाटक गजकेसरी पूज्य श्री गणेशलालजी म.सा. एवं श्रमणसूर्य मरुधर केसरी पूज्य श्री मिश्रीमलजी म.सा. का पुण्य स्मृति दिवस बड़े उत्साह, तप-त्याग एवं सामायिक के साथ मनाया गया।

सवाईमाधोपुर– आवासन मण्डल स्थित सामायिक स्वाध्याय भवन में आचार्य श्री हस्ती दीक्षा शताब्दी की शुरूआत 26 जनवरी रविवार को प्रातः सामूहिक सामायिक स्वाध्याय संगोष्ठी में आवश्यक सूत्र के स्वाध्याय से हुई। आचार्य श्री हस्ती दीक्षा शताब्दी पोरवाल संभाग क्षेत्रीय समारोह सामायिक दिवस के रूप में श्रद्धा भक्ति उत्साह के साथ श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल, युवक परिषद आवासन मण्डल के संयुक्त तत्वाधान में आयोजित हुआ। प्रमुखवक्ता श्री शिखरचंद छाजेड़-करही (मध्यप्रदेश), श्री सुशील हींगंड, पाली मारवाड़ सहित अनेक वक्ताओं ने सामायिक-स्वाध्याय एवं गुरु-महिमा को रेखाकिंत किया।-धनसुरेश जैन

नागपुर (महा.)– जैनाचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 100 वां दीक्षा-दिवस 26

जनवरी, 2020 को वर्धमान भवन, वर्धमान नगर में तत्त्वज्ञानी श्रद्धेय श्री सुमतिमुनिजी म.सा. आदि ठाणा 2 एवं तपस्वी महासती श्री रुचिताकंवरजी म.सा. आदि ठाणा 4 के संयुक्त सान्निध्य में मनाया गया। इस दिवस को तप-त्याग एवं 2-3 सामायिक की साधना के साथ मनाया गया। कार्यक्रम में लगभग 200 श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही।

पुलगांव (महा.)– जैनाचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 100 वां दीक्षा-दिवस 26 जनवरी, 2020 को श्री अक्षयमुनिजी म.सा. एवं श्री दिनेशमुनिजी म.सा. के पावन सान्निध्य में मनाया गया। दोनों संतों ने आचार्य श्री हस्ती की जीवनी पर प्रकाश डाला। इस अवसर पर लगभग 50 सामायिक की आराधना हुई।

पांढरकवडा (महा.)– जैनाचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 100 वां दीक्षा-दिवस 26 जनवरी, 2020 को महासतियाजी के सान्निध्य में सामायिक-आराधना के साथ तप-त्यागपूर्वक मनाया गया। इस प्रसंग को चंद्रपूर, अमरावती, बड़नेरा, पारशिवनी, खापरखेड़ा, भण्डारा, वर्धा, हिगणघाट, मांढेली आदि अनेक शहरों में सामायिक दिवस के रूप में तप-त्यागपूर्वक मनाया गया।-महेन्द्र एम. कटारिया

आचार्य हस्ती के 110 वें जन्मदिवस पर विभिन्न स्थानों पर ज्ञानाराधन एवं तपाराधन

पालड़ी (अहमदाबाद)– अध्यात्मयोगी पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. का 110वां जन्म दिवस पौष शुक्ला 14 गुरूवार 9 जनवरी 2020 को पालड़ी (अहमदाबाद) में सेवाभावी श्रद्धेय श्री नन्दीषेणमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में तप-त्याग एवं सामायिक-आराधना के साथ मनाया गया। इस अवसर पर संत भगवन्तों ने गुरु-गुणगान करते हुए आचार्य भगवन्त के विभिन्न प्रसंगों को चित्रित किया। पाली, चेन्नई, बैंगलुरु आदि क्षेत्रों से गुजराती एवं मारवाड़ी श्रावक-श्राविकाओं की उपस्थिति रही। इस अवसर पर 110 एकासन एवं 15 उपवास हुए।

-पदमचन्द कोठारी

बजरिया– अध्यात्मयोगी पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. का 110वां जन्म दिवस पौष शुक्ला 14 गुरूवार 9 जनवरी 2020 को श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, श्री जैन रत्न युवक परिषद, शाखा-बजरिया सवाई माधोपुर द्वारा प्रातः 9:15 बजे से बालमन्दिर कालोनी बजरिया में सामूहिक सामायिक एकासन दिवस के रूप में मनाया गया, जिसमें पोरवाल संभाग के श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही। समारोह की अध्यक्षता श्री सुबाहुकुमार जी जैन सर्राफ क्षेत्रीय प्रधान ने की। मुख्य अतिथि श्री आनन्दजी चौपड़ा, कार्याध्यक्ष ने गुरूदेव के विराट व्यक्तित्व कृतित्व, उपकारों व आचार्य श्री हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष में संघ व सहयोगी संस्थाओं की कार्य योजना से अवगत कराकर प्रभावी क्रियान्वयन हेतु आह्वान किया। विशिष्ट अतिथि श्री पवन जी जैन, अति. पुलिस अधीक्षक कोटा, श्री राजेन्द्र जी जैन ''राजा'' राष्ट्रीय मंत्री, श्री कपिल जी जैन, उप सभापति नगर परिषद, सवाई माधोपुर ने पूज्य गुरूदेव के गुणगान कर पोरवाल क्षेत्र

के श्रावक-श्राविकाओं की श्रद्धा भक्ति व धर्मानुराग की सराहना की। राष्ट्रीय उपाध्यक्ष श्री कुशल जी जैन ने नियमित सामायिक स्वाध्याय करने व प्रत्येक रविवार को नगर परिषद क्षेत्र में चल रही सामायिक स्वाध्याय संगोष्ठी में पधारकर आगम स्वाध्याय का लाभ लेने की प्रेरणा की। श्री धर्मचन्द जी कुस्तला, श्री राकेश जी जैन, श्रीमती रजनीजी जैन, श्री धर्मेन्द्र जी जैन-अलीगढ़, श्री जगदीशप्रसादजी-कोटा, श्री पदमचन्दजी जैन गोटेवाला, श्री सुरेशजी-कुस्तला, श्रीमती अरूणाजी जैन-अलीगढ़, श्रीमती रेखाजी जैन-बजरिया, श्रीमती मोहिनीजी जैन-आलनपुर एवं श्रीमती उम्मेदचन्द जी जरखोदा ने गुरु गुण कीर्तन व गुरु महिमा को रेखांकित किया। शाखा अध्यक्ष श्री मुकेशजी जैन पान वालों ने आगन्तुक अतिथियों व गुरूभक्तों का अभिनन्दन करते हुए आभार व्यक्त किया। क्षेत्र से 1100 एकासन तप का लक्ष्य पूर्ण हुआ। -धनसुरेश जैन

निफाड़ (महा.)– इतिहास मार्तण्ड, सामायिक और स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, अध्यात्मयोगी आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 110 वां जन्मदिवस निफाड़ (नाशिक) में आचार्य श्री रामलालजी म.सा. की आज्ञानुवर्तिनी शासनदीपिका प.पू.उज्वलाप्रभाजी म.सा., प.पू. प्रमितिश्रीजी म.सा., प. पू. नवकारश्रीजी म.सा. आदि ठाणा 3 के सान्निध्य में सामायिक, स्वाध्याय, तप आदि के साथ मनाया गया। महासती उज्वलाप्रभाजी म. सा. ने आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. के संयमी जीवन पर प्रकाश डाला। प्रार्थना, हस्ती चालीसा, सामायिक और स्वाध्याय आदि धार्मिक गतिविधियों में बहुत अच्छी संख्या में श्रावक-श्राविकाओं ने भाग लिया। संघ की ओर से अशोकजी कर्नावट ने आचार्य श्री के गुणानुवाद किये।

बालोतरा (राज.)– अध्यात्मयोगी आचार्य श्री हस्तीमलजी म.सा. का 110 वां जन्मदिवस बालोतरा (बाड़मेर) में सामायिक-स्वाध्याय दिवस के रूप में मनाया गया। कार्यक्रम में श्री जैन रत्न श्रावक संघ एवं श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल एवं सामूहिक सामायिक-स्वाध्याय दिवस पर अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के कार्यकारिणी सदस्य श्रावकरत्न श्री ओमप्रकाशजी बांठिया ने आचार्यश्री के जीवन के प्रेरणा प्रसंगों की जानकारी देते हुए गुरु महिमा का बखान किया। कार्यक्रम में गीत प्रतियोगिता का आयोजन रखा गया। श्रीमती अनीतादेवीजी धर्मसहायिका श्री पवन कुमारजी जागीरदार द्वारा एक वर्ष तक ज्ञानशाला संचालन एवं पारितोषिक की घोषणा की गई। साथ ही प्रत्येक रविवार को श्रावक-श्राविकाओं को सामायिक-साधना से जुड़ने का आह्वान किया गया। वरिष्ठ श्रावक श्री हनुमानचंदजी सालेचा ने मंगल पाठ सुनाया। आयोजित कार्यक्रम में श्रावक-श्राविकाओं की अच्छी उपस्थिति रही।

उपाध्यायप्रवर की स्मृति में विभिन्न स्थानों पर गुणानुवाद

शान्त-दान्त-गम्भीर उपाध्यायप्रवर पण्डितरत्न श्री मानचन्द्रजी म.सा. के समाधिमरण पर देश के विभिन्न प्रान्तों में सभी सम्प्रदायों के संत-सतीवृन्द के सान्निध्य में तथा विभिन्न संघों में गुणानुवाद सभाओं के आयोजन हुए। कई सम्प्रदायों

से प्राप्त पत्रों के बारे में तथा कई स्थानों की रिपोर्ट रत्नम् के पूर्व अंक में दी जा चुकी है। काश्मीर प्रचारिका महसती श्री उमरावकंवरजी म.सा. 'अर्चना' के सुशिष्या आर्य डॉ. सुप्रभा 'सुधा' एवं आचार्यप्रवर श्री सुदर्शनलालजी म.सा. की सेवा से भी पत्र प्राप्त हुए हैं। अन्य स्थानों से प्राप्त रिपोर्ट इस प्रकार हैं-

नंदुरबार– पं.रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार, 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर दिनांक 04 जनवरी, 2020 को श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ। जिसमें श्रीमती मनीषाजी कांकरिया-मंत्री (श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल), श्रीमती रंजनाजी कांकरिया-अध्यक्ष (श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल), श्रीमती मनीषाजी लुणावत, श्री निर्मलजी कांकरिया आदि श्रावकों ने उपाध्यायप्रवर के जीवन परीचय की जानकारी दी। तत्पश्चात् श्रद्धेय श्री देवेन्द्रमुनिजी म.सा. ने उपाध्यायप्रवर के जीवन पर प्रकाश डालते हुए फरमाया कि उपाध्याय प्रवर संयमी साधक थे। श्रद्धेय श्री मनीषमुनिजी म.सा. ने फरमाया कि जिसने मोह को जीत लिया वह महापुरुष बन गया। उपाध्यायप्रवर ने अपने जीवन में मोह को जीतने का प्रयास किया, इसलिये उपाध्यायप्रवर अचलचन्दजी के पुत्र होने से व्रतों में अचल रहे साथ ही छोटा बाई के अंगजात होने के कारण उपाध्यायप्रवर ने हमेशा अपने आपको छोटा बना कर रखा। यह सब साधना मोह को जीतने पर संभव होती है। अंत में चार लोगस्स का कार्योत्सर्ग किया गया।

फत्तेपुर– पं.रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार, 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण होने पर दिनांक 04 जनवरी, 2020 को व्याख्यात्री महासती श्री चारित्रलताजी म.सा. आदि ठाणा के सान्निध्य में गुणानुवाद सभा का आयोजन हुआ। महासतीजी ने फरमाया कि उपाध्यायप्रवर रत्नसंघ के ही नहीं, अपितु सम्मूचे जिनशासन की बगिया के सुरभित सुमन थे। उस चौथे आरे की बानगी अद्भुत विभूति, समता एवं सरलता की साक्षात् प्रतिमूर्ति के दर्शन-वंदन से ही अलौकिक आनन्द की अनुभूति होती थी।-प्रकाश जैन

कंवलियास (भीलवाड़ा)– पं.रत्न उपाध्यायप्रवर श्री मानचन्द्रजी म.सा. का रविवार, 02 जनवरी, 2020 को चौविहार प्रत्याख्यान के साथ समाधिमरण पर महावीर भवन में श्रद्धांजलि सभा का आयोजन किया गया। जिसमें उनके शान्त-संयम जीवन के अनेक प्रसंग स्मृति में छा गये। सभा में श्री अमोलकचंदजी सुराणा ने अपनी श्रद्धाभव्यक्ति रखते हुए उनके संयमी गुणों का वर्णन किया। रत्नवंश की महान् विभूति को क्रूर काल ने हमारे से ओजल कर दिया। शान्त-दान्त प्रतिक्षण साधना में रमण करते हुए उत्कृष्ट संयम का पालन सभी के लिये अनुकरणीय है। संघ की प्रबल पुण्यवानी से इस छोटे से संघ को संवत् 2051 में आपके वर्षावास का लाभ मिला। जिसको संघ कभी विस्मृत नहीं कर पायेगा। अंत में चार-चार लोगस्स का ध्यान कर उनको श्रद्धांजलि दी गई।-अमोलकचन्द सुराना

अखिल भारतीय स्तर पर "आवश्यक सूत्र आगम" पर लिखित परीक्षा 27 जनवरी, 2021 को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ द्वारा सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्म- योगी, परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष को पूरे भारत वर्ष में अटूट श्रद्धा भक्ति, सेवा एवं उत्साह के साथ मनाया जा रहा है।

रत्न संघ के प्रत्येक परिवार में कम से कम एक सदस्य प्रतिक्रमण को विधि एवं अर्थ सहित कण्ठस्थ करें ऐसा लक्ष्य संघ द्वारा लिया गया है। प्रतिक्रमण आवश्यक सूत्र आगम का एक अंग है। प्रत्येक सदस्य सूत्रों के अर्थ एवं भावार्थ को समझकर अपने क्रियात्मक पक्ष को मजबूत करें, एतदर्थ अखिल भारतीय स्तर पर आवश्यक सूत्र आगम पर लिखित परीक्षा का आयोजन आचार्य भगवन्त के 111 वें जन्मदिवस 27 जनवरी, 2021 को किया जा रहा है। सभी सदस्य दीक्षा शताब्दी वर्ष में आवश्यक सूत्र आगम का प्रतिदिन स्वाध्याय कर इस परीक्षा में अवश्य भाग लें। परीक्षा से सम्बन्धित विस्तृत जानकारी इस प्रकार हैं-

1. इस परीक्षा हेतु फार्म ऑनलाइन एवं ऑफलाइन दोनों तरह से उपलब्ध हैं। ऑनलाइन फार्म रत्नसंघ एप्प एवं वेबसाईट के माध्यम से भरे जा सकेंगे।
2. परीक्षा का समय 3.00 घण्टे रहेगा, जिसमें दो तरह के प्रश्न पत्र होंगे। प्रथम Objective Type के प्रश्न-पत्र का समय आधा घण्टा रहेगा, जिसमें परीक्षार्थियों को उत्तर कण्ठस्थ किए गए ज्ञान के आधार पर देना होगा। द्वितीय Subjective Type के प्रश्न पत्र का समय 2.5 घण्टा रहेगा, जिसमें आवश्यक सूत्र की पुस्तक साथ में लेकर प्रश्नों के उत्तर ढूंढकर लिखे जा सकेंगे।
3. परीक्षार्थियों के लिए आवश्यक सूत्र पुस्तक का अर्द्धमूल्य 50/- रखा गया है। जो परीक्षार्थी इस परीक्षा में भाग लेने हेतु फार्म भरकर देंगे, उन्हें ही पुस्तक दी जायेंगी। डाक द्वारा पुस्तक मंगवाने पर उसका व्यय अलग से देय होगा।
4. जहाँ कम से कम 10 परीक्षार्थी होंगे वहाँ परीक्षा का केन्द्र रखा जायेगा।
5. प्रश्न-पत्र में आवश्यक सूत्र की पुस्तक में से कहीं से भी प्रश्न दिये जा सकते हैं।
6. आवश्यक सूत्र की परीक्षा में बैठने वाले सभी परीक्षार्थियों को प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा।
7. आवश्यक सूत्र परीक्षा में वरीयता सूची में प्रथम स्थान पाने वाले को 25000/-, द्वितीय-21000/-, तृतीय-15000/- का पुरस्कार प्रदान किया जायेगा। परीक्षा में 90 से अधिक अंक पाने वाले को 1000/- तथा 80 से 90 तक अंक पाने वाले को 500/- का प्रोत्साहन पुरस्कार दिया जायेगा।
8. 50 अंक लाने वाले को उत्तीर्ण माना जायेगा तथा सभी उत्तीर्ण परीक्षार्थियों को प्रशस्ति पत्र दिया जायेगा।
9. उक्त परीक्षा के सम्बन्धित अन्य कोई जानकारी एवं किसी भी प्रकार का उचित

परिवर्तन होने पर उसकी सूचना जिनवाणी, रत्नम् एवं रत्नसंघ एप्प के माध्यम से दी जायेगी।

उक्त परीक्षा में देश भर के जैन-जैनेतर सदस्यों के साथ ही संघ एवं सहयोगी संस्थाओं के सभी पदाधिकारी, संस्कार केन्द्र के छात्र एवं अध्यापक, स्वाध्याय संघ के स्वाध्यायी, शिक्षण बोर्ड के परीक्षार्थी, केन्द्राधीक्षक एवं निरीक्षक भी अवश्य भाग लें, ऐसा आग्रहपूर्ण निवेदन है।-धनपत सेठिया, महामंत्री

आचार्य हस्ती के जीवन–दर्शन पर ''रत्नसंघ एप्प'' के माध्यम से ऑनलाइन परीक्षा

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, इतिहास मार्तण्ड, युगमनीषी, अध्यात्म- योगी, परम पूज्य आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमलजी म.सा. का दीक्षा शताब्दी वर्ष 26 जनवरी 2020 से प्रारम्भ हो चुका है। संघ द्वारा इस वर्ष में आचार्य हस्ती के जीवन दर्शन, सामायिक, प्रतिक्रमण, आवश्यक सूत्र आधारित विषयों को केन्द्र में रखकर कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया है। इसी कड़ी में रत्नसंघ एप्प के माध्यम से प्रतिमाह ऑनलाइन परीक्षा आयोजित की जायेगी। इस परीक्षा की प्रमुख जानकारी इस प्रकार हैं-

1. यह ऑनलाइन परीक्षा प्रत्येक माह के अंतिम रविवार को दोपहर 3 से 4 बजे के मध्य आयोजित होगी। परीक्षार्थियों को इसी एक घण्टे में एप्प में लॉगइन करना होगा। प्रथम परीक्षा 29 मार्च, 2020 को आयोजित की जायेगी।
2. प्रत्येक परीक्षार्थी को एप्प में परीक्षा देने हेतु 30 मिनट का समय मिलेगा, किन्तु 4 बजे के बाद परीक्षा नहीं दे सकेंगे।
3. इस परीक्षा में आचार्य श्री हस्ती के जीवन सम्बन्धी तथा सामायिक प्रतिक्रमण सम्बन्धी बहुविकल्पात्मक 30 प्रश्न प्रतिमाह दिये जायेंगे।
4. तीन माह की परीक्षा के पश्चात् परीक्षार्थियों के तीन माह के औसत अंक निकालकर वरीयतानुसार प्रथम को 2100/-, द्वितीय को 1100/-, तृतीय को 500/- तथा 10 सांत्वना पुरस्कार 250 के रुपये प्रदान किए जायेंगे।
5. मार्च-2020 से फरवरी-2021 तक की सभी परीक्षाओं में भाग लेने वालों में से सर्वोच्च औसत अंक पाने वाले परीक्षार्थियों को श्रेणी अनुसार विशेष रूप से सम्मानित किया जायेगा।
6. सभी पुरस्कार अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ की ओर से दिये जायेंगे।
7. उपर्युक्त नियमों में आवश्यकतानुसार उचित परिवर्तन किया जा सकेगा, जिसकी सूचना रत्न संघ एप्प में दी जायेगी।
8. परीक्षा से सम्बन्धित किसी भी जानकारी हेतु ईमेल- sanghwebsite@gmail.com तथा मोबाइल नं. 94142-67824 पर प्रातः 10.00 बजे से सायं 4.00 बजे तक सम्पर्क किया जा सकता है।

महाराष्ट्र, मेवाड़ एवं मध्यप्रदेश में प्रचार–प्रसार सम्पन्न

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा दिनांक 31 जनवरी से 02 फरवरी 2020 तक महाराष्ट्र में तथा दिनांक 31 जनवरी से 04 फरवरी 2020 तक मेवाड़ एवं मध्यप्रदेश क्षेत्र में प्रचार-प्रसार कार्यक्रम आयोजित किया गया। महाराष्ट्र में शिरूड़, मुकटी, फागणा, पिंपलनेर, जायखेड़ा, ताहाराबाद, नामपुर, सटाणा, सौंदाणा, चांदवड, नादगांव, न्यायडोंगरी, कजगांव सहित कुल 13 क्षेत्रों में तथा मेवाड़ एवं मध्यप्रदेश क्षेत्र के मावली, अरनोदा, बाडी, नीमच, सिंगोली, मोरवन बांध, गरोठ, बोलिया, आकोदिया मण्डी, शुजालपुर मण्डी, बेरछा मण्डी, बागली, इन्दौर, हातोद, बीड़, गौतमपुरा, उन्हेल, कालूखेड़ा, सांवरिया मण्डपिया, भीलवाड़ा सहित 20 क्षेत्रों में प्रवास कार्यक्रम आयोजित किया गया।

महाराष्ट्र कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ के संयोजक श्री सुभाष जी हुण्डीवाल-जोधपुर, महाराष्ट्र स्वाध्याय संघ के सह-संयोजक श्री मनोज जी संचेती-जलगांव, संघ के प्रचारक श्री शुभमजी बोहरा- जलगांव की महनीय सेवाएं प्राप्त हुई। मेवाड़ एवं मध्यप्रदेश के कार्यक्रम में स्वाध्याय संघ के सचिव श्री सुनीलजी संकलेचा-जोधपुर, मेवाड़ शाखा संयोजक श्री कन्हैयालालजी जैन-भीलवाड़ा, संघ के प्रचारक श्री रिन्कुजी जैन- उज्जैन एवं वरिष्ठ स्वाध्यायी श्री अखिलेशजी नाहर-इन्दौर की महनीय सेवाएं प्राप्त हुई। सभी स्थानों पर नये स्वाध्यायी बनाने, पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी बुलाने, शिक्षण बोर्ड की परीक्षाओं में मांग लेकर ज्ञान वृद्धि करने, धार्मिक पाठशाला प्रारम्भ करने, आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष एवं स्वाध्याय संघ के हीरक जयंती वर्ष में आयोजित होने वाले कार्यक्रमों की जानकारी प्रदान की गई।

कार्यक्रम के अन्तर्गत पर्युषण पर्व में स्वाध्यायी बुलाने हेतु महाराष्ट्र से 5 क्षेत्रों एवं मेवाड़ एवं मध्यप्रदेश से 6 मांग प्राप्त हुई। प्रचार कार्यक्रमों के माध्यम से शिक्षण बोर्ड की आगामी जुलाई माह की परीक्षा हेतु प्रेरणा की गई तथा फॉर्म भरवाए गए। महाराष्ट्र के ताहाराबाद में शनिवार एवं रविवार को पाठशाला तथा सौंदाणा में रविवार संस्कार शिविर शुरू किया गया। कार्यक्रमों के अन्तर्गत 6 नये स्वाध्यायी भी बनाये गए। साथ ही सभी श्रावक-श्राविकाओं को स्थानक में आकर सामायिक-स्वाध्याय करने की प्रभावी प्रेरणा की गई।-सुनील संकलेचा, सचिव

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन

आचार्यश्री हस्ती दीक्षा शताब्दी के अवसर पर श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर द्वारा राष्ट्रीय स्तर पर निबन्ध प्रतियोगिता का आयोजन किया जा रहा है। निबन्ध का विषय **"सामायिक एवं स्वाध्याय के प्रेरक आचार्य हस्ती"** रखा गया है। उक्त निबन्ध मौलिक, तथ्यात्मक तथा 1500 शब्दों से अधिक नहीं होना चाहिये। इस प्रतियोगिता में सभी आयु वर्ग के श्रावक-श्राविकाएँ भाग ले सकते हैं।

प्रतियोगिता में प्रथम स्थान प्राप्त करने वाले को 1500 रुपये का, द्वितीय स्थान पाने वाले को 1100 रुपये का, तृतीय स्थान पाने वाले को 700 रुपये का एवं 10 प्रतिभागियों को 200 रुपये प्रत्येक को सांत्वना पुरस्कार दिया जायेगा। सभी प्रतिभागियों को अपने बैंक खाते की जानकारी साथ में भेजना अनिवार्य है। निबन्ध भिजवाने की अंतिम तिथि 10 मार्च, 2020 निर्धारित है। **सम्पर्क सूत्र**:– संयोजक/सचिव, श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, सामायिक-स्वाध्याय भवन, प्लॉट नं. 2, नेहरूपार्क, जोधपुर-342003 (राज.), फोन:-0291-2624891, मोबाइल: 94141-26279, 94625-43360, ईमेल:- swadhyaysanghjodhpur@gmail.com -सुभाष हुण्डीवाल, संयोजक

शिक्षण बोर्ड की आगामी परीक्षा 05 जुलाई को

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक शिक्षण बोर्ड, जोधपुर द्वारा कक्षा 1 से 12 तक की परीक्षा रविवार, 05 जुलाई, 2020 को दोपहर 12.30 से 3.30 बजे तक आयोजित की जायेगी। आवेदन-पत्र, पुस्तकें, परीक्षा सम्बन्धी अन्य जानकारी के लिए सम्पर्क करें- अशोक बाफना (चैन्नई) संयोजक- 094442-70145, प्रशांत पारख (जलगांव) सह-संयोजक-094222-32501, सुभाष नाहर (जोधपुर) सचिव-094132- 02678, शिक्षण बोर्ड कार्यालय- सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरु पार्क, जोधपुर- 342003 (राज) 291-2630490, 76109-53735 |-सुभाष नाहर, सचिव

संस्कार केन्द्र द्वारा जोधपुर में आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म. सा. के जीवनी पर आधारित प्रतियोगिता परीक्षा का आयोजन

अखिल भारतीय श्री जैन रत्न आध्यात्मिक संस्कार केन्द्र द्वारा 26 जनवरी, 2020 को परम श्रद्धेय आचार्यप्रवर श्री हस्तीमलजी म.सा. के दीक्षा-शताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में जोधपुर के 30 रविवारीय केन्द्रों पर आचार्य श्री की जीवनी के बारे में अध्यापकों द्वारा छात्र-छात्राओं को जानकारी दी गई।

दिनांक 09 फरवरी, 2020 को सभी रविवारीय संस्कार शिविर केन्द्रों पर जीवनी पर आधारित प्रश्नोत्तरी की लिखित परीक्षा आयोजित की गई, जिसमें 214 छात्र-छात्राओं ने भाग लिया। उत्तीर्ण छात्र-छात्राओं को प्रोत्साहन पुरस्कार एवं प्रशस्ति-पत्र प्रदान किए गये |-राजेश भण्डारी, सचिव

श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा जिनशासन मेले का आयोजन

श्री जैन रत्न श्राविका मण्डल, जोधपुर द्वारा 19 जनवरी, 2020 को सामायिक-स्वाध्याय भवन, नेहरूपार्क में ''जिनशासन मेले'' का आयोजन किया गया। मेले का उद्देश्य बच्चों में संस्कार जगाना, युवाओं को धर्म से जोड़ना एवं घर को यतना से सुसज्जित करना था। कार्यक्रम को सफल बनाने में समस्त पदाधिकारियों एवं कार्यकर्त्ताओं ने अपने अन्तःकरण से पूर्ण निष्ठा एवं लगन से अपना सहयोग प्रदान किया। किसी ने अपनी स्टॉल सजाने में, किसी ने खेल बनाने में तो किसी ने खेल खिलाने में सहयोग प्रदान किया। अलग-अलग तरह की स्टॉलें

सजाने का कार्य श्राविकाओं एवं छोटी-छोटी बालिकाओं द्वारा किया गया। इस मेले में सोलह सतियों के नाम पर एवं ''खेल-खेल में सिखे ज्ञान, जैन धर्म है बड़ा महान्'' और ''यतना से घर को सजाना हैं, निज आतम को पाना है'' के आधार पर कुल 18 स्टॉल लगाई गई।

मेले का उद्घाटन रत्नसंघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया द्वारा किया गया। इस अवसर पर संघ-संरक्षक श्री प्रसन्नचन्दजी बाफना, संघ महामंत्री श्री धनपतजी सेठिया, श्राविका मण्डल कार्याध्यक्ष श्रीमती बीनाजी मेहता, स्थानीय संघमंत्री श्री नवरतनजी गिड़िया सहित संघ, श्राविका मण्डल एवं युवक परिषद् के कई पदाधिकारी उपस्थित थे। श्राविका मण्डल की अध्यक्ष श्रीमती सुमनजी सिंघवी ने इस कार्यक्रम को सफल बनाने के लिए सभी आगन्तुकों का धन्यवाद और आभार प्रकट किया।-काजल जैन, सचिव

हैदराबाद में आचार्य हस्ती सेवा सम्मान का आयोजन

प्रातः स्मरणीय पूज्य गुरुदेव आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज के दीक्षा शताब्दी वर्ष पर आचार्य हस्ती फाउण्डेशन के तत्त्वावधान में हैदराबाद के कारवान स्थित दादाबाड़ी में 16 फरवरी, 2020 को आयोजित भव्य सम्मान समारोह में सुप्रसिद्ध समाजसेवी श्री सुरेन्द्रमलजी लुनिया को 9 वें आचार्य हस्ती सेवा सम्मान से नवाजा गया। आयोजन में मुख्य अतिथि के रूप में अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री प्रकाशचन्दजी टाटिया, पूर्व राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री कैलाशचन्दजी हीरावत, शाकाहार रत्न आचार्य श्री निवास, प्रमुख वक्ता के रूप में जिनवाणी के प्रधान सम्पादक डॉ. धर्मचन्दजी जैन एवं विशेष अतिथि के रूप में जैन सेवा संघ के पूर्व अध्यक्ष श्री नवरतनमलजी गुन्देचा पधारे।

कार्यक्रम के संचालक एवं फाउण्डेशन के महामंत्री श्री श्रीपाल देशलहरा ने बताया कि यह सम्मान समाजसेवा के क्षेत्र में विशिष्ट सेवाएँ देने वाले को दिया जाता है। कोषाध्यक्ष वीरपिता श्री राजेन्द्रजी कटारिया ने अतिथियों का स्वागत किया और सहमंत्री श्री सुरेशजी गुगलिया ने श्री सुरेन्द्रजी लुनिया को दिए जाने वाले प्रशस्ति-पत्र का वाचन किया। समारोह के मुख्य अतिथि न्यायमूर्ति श्री प्रकाशजी टाटिया ने आचार्य श्री हस्तीमलजी महाराज के प्रवचनों पर आधारित पुस्तक ''आध्यात्मिक आलोक'' भेंट कर उन्हें सम्मानित किया। इस अवसर पर आचार्य हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष पर बनाये गए पोस्टर का विमोचन भी किया गया।

प्रमुख वक्ता डॉ. धर्मचन्दजी जैन ने आचार्य हस्ती की साहित्य एवं समाज को देन विषय पर विचार प्रस्तुत करते हुए कहा कि आचार्यश्री के सिद्धान्त एवं विचारों ने समाज और जीवन को सुधारने में अपना अमूल्य योगदान दिया है। व्यक्ति अपने दुःख का स्वयं ही कारक होता है। गुरुदेव ने स्वाध्याय और सामायिक के रूप में ऐसे अमोघ उपाय बताए है कि व्यक्ति अपने जीवन को खुद आत्मकल्याण की राह पर ले जा सकता है।

शाकाहार रत्न आचार्य श्री श्रीनिवास ने अपने उद्‌बोधन में अहिंसा के महत्त्व को प्रतिपादित किया। इस अवसर पर विभिन्न भाषाओं में लिखित पुस्तक ''शाकाहार जगत्'' का विमोचन भी किया गया। न्यायाधिपति श्री प्रकाशजी टाटिया एवं श्री कैलाशचन्दजी हीरावत ने भी आचार्य श्री के व्यक्तित्व एवं कृतित्व पर प्रकाश डाला। आचार्य हस्ती सम्मान से सम्मानित श्री सुरेन्द्रजी लुनिया ने कहा कि उनका सौभाग्य है कि इस आयोजन में जुड़ने का अवसर मिला। समाज-सेवा मेरा लक्ष्य है, मुझे जो कुछ समाज ने दिया है मैं भी समाज की भलाई में योगदान देकर उसे लौटाना चाहता हूँ।

इस अवसर पर अनेक सामाजिक संस्थाओं ने भी श्री लुनिया का सम्मान किया। कार्यक्रम में अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ के क्षेत्रीय प्रधान श्री दलपतराजजी छाजेड़ सहित संघ के पदाधिकारी एवं गणमान्य लोग मौजूद थे।

-श्रीपाल देशलहरा

अ. भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ को प्राप्त साभार

2101/- श्रीमती प्रसन्नकंवरजी भण्डारी धर्मसहायिका स्व. श्री एम.एम. भण्डारी, जोधपुर, जीवदया हेतु।

1100/- श्रीमती सुशीलाजी धर्मसहायिका स्व. श्री कंवलराजजी मेहता, श्री नरेन्द्रजी-श्रीमती नूतनजी, श्री नवीन्द्रजी-श्रीमती उर्मिलाजी, डॉ. नवनीतजी-श्रीमती लीनाजी, श्रीमती नीलमजी-श्री ललितजी जैन, श्री सिद्धितजी मेहता, जोधपुर, श्री कंवलराजजी मेहता की प्रथम पुण्य स्मृति में श्रद्धांजलि स्वरूप भेंट।

1100/- श्री श्रेयांसजी सिंघवी सुपुत्र श्री सुमितजी सिंघवी, चेंगलपेठ, चेन्नई, जीवदया हेतु।

श्री स्थानकवासी जैन स्वाध्याय संघ, जोधपुर को प्राप्त साभार

20000/- सुश्रावक श्रीमान् छतरचन्दसा मेहता परिवार की ओर से सहयोगार्थ।

5100/- वीरपिता श्री सुनीलकुमारजी, रोहनकुमारजी, रुमितकुमारजी लुणावत, नरसिंहपुर (मध्यप्रदेश), 29 जनवरी, 2020 को जलगांव में मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न होने पर।

5100/- श्री उम्मेदचन्दजी, लालचन्दजी, नमोकारजी, मोहनलालजी जैन, बजरिया -सवाईमाधोपुर, श्रावकरत्न श्री रामदयालजी जैन की पुण्यस्मृति में।

1101/- श्री महावीरप्रसादजी जैन, कोटा, अपने पुत्र चि. गजेन्द्र संग रिन्की सुपुत्री श्री कमलेशकुमारजी जैन-अलीगढ़-रामपुरा का विवाह सानन्द सम्पन्न होने के उपलक्ष्य में।

1100/- श्री महेन्द्रकुमारजी, नीरजकुमारजी जैन 'आलनपुर वाले', सवाईमाधोपुर, चि. सचिन का शुभविवाह आयुष्यमति सोनल सुपुत्री श्री जिनेशजी जैन के साथ सम्पन्न होने पर।

501/- श्री सुरेशचन्दजी निक्कीजी जैन 'खातोली वाले', सवाईमाधोपुर, चिं.

मनीष सुपुत्र स्व. श्री रमेशचन्दजी जैन का शुभ विवाह सौ. लक्ष्मी सुपुत्री श्री धर्मचन्दजी जैन 'आलनपुर वालों' के साथ 16 जनवरी, 2020 को सम्पन्न होने के अवसर पर।

501/- श्री वाडलीप्रसादजी, मुकेशकुमारजी जैन ''सूरवाल वाले'', जयपुर, अपने सुपुत्र के विवाह के उपलक्ष्य में।

अ. भा. श्री जैन रत्न आ. शिक्षणबोर्ड को प्राप्त साभार

20000/- सुश्रावक श्रीमान् छतरचन्दसा मेहता परिवार की ओर से पुस्तक प्रकाशन हेतु भेंट।

2100/- वीरपिता श्री सुनीलकुमारजी, रोहनकुमारजी, रुमितकुमारजी लुणावत, नरसिंहपुर (मध्यप्रदेश), 29 जनवरी, 2020 को जलगांव में मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न होने पर।

1100/- श्री दिलखुशराजजी जैन, गोरेगाँव-मुम्बई, जनवरी-2020 हेतु सहयोगार्थ।

अ.भा. श्री जैन रत्न आ. संस्कार केन्द्र को प्राप्त साभार

20000/- सुश्रावक श्रीमान् छतरचन्दसा मेहता परिवार की ओर से सहयोगार्थ।

8500/- श्री प्रवीणकुमारजी, पदमाजी, मनोजजी, शैलेषजी, रक्षिताजी, सिद्धार्थजी संकलेचा, कुम्भकोणम, चैन्नई, पूज्य मातुश्री श्रीमती सुशीलाजी संकलेचा की पावन स्मृति में।

6290/- छोटमल लाडकँवर नव-सुमन डागा चैरिटेबल ट्रस्ट, जोधपुर।

2100/- वीरपिता श्री सुनीलकुमारजी, रोहनकुमारजी, रुमितकुमारजी लुणावत, नरसिंहपुर (मध्यप्रदेश), 29 जनवरी, 2020 को जलगांव में मुमुक्षु बहिन सुश्री निमिषाजी लुणावत की जैन भागवती दीक्षा सम्पन्न होने पर।

गजेन्द्रनिधि द्वारा आचार्य हस्ती स्कॉलरशिप फण्ड

(अखिल भारतीय श्री जैन रत्न युवक परिषद् द्वारा क्रियान्वित)

100000/-श्री अम्बालालजी कर्णावट, साहूकारपेठ, चेन्नई।

100000/-श्री दुलीचन्दजी बाघमार, किलपॉक, चेन्नई।

24000/- श्रीमती सुनीताजी जैन, एम. डी. रोड़, जयपुर।

22000/- श्रीमती रेखा इन्दरमलजी जारोली, बालोतरा, जिला-बाड़मेर (राज.)।

12000/- श्री पंकजजी सुपुत्र श्री पी.आर. जैन, महामंदिर, जोधपुर (राज.)।

12000/- श्री निर्मलजी जामड़, जयपुर (राज.)।

12000/- श्री महेन्द्रजी गांग, सूरत (गुजरात)।

12000/- श्री गणपतराजजी बाघमार, चिंतादरीपेठ, चेन्नई।

6000/- श्रीमती चन्द्राजी मेहता, जोधपुर, स्व. श्री मानचन्दजी मेहता की प्रथम पुण्यतिथि की स्मृति में।

आचार्य श्री हस्ती दीक्षा शताब्दी वर्ष (2020–21)

(माघ शुक्ला द्वितीया, 26 जनवरी 2020 से माघ शुक्ला द्वितीया, 13 फरवरी 2021 तक)

सामायिक-स्वाध्याय के प्रबल प्रेरक, अध्यात्म योगी, इतिहास मार्तण्ड, परमश्रद्धेय आचार्य भगवन्त 1008 श्री हस्तीमल जी म.सा. के दीक्षा शताब्दी वर्ष को अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ एवं समस्त सहयोगी संस्थायें मिलकर संयुक्त रूप से पूरे भारत वर्ष में अटूट श्रद्धा, भक्ति सेवा व उत्साह के साथ मनाया जा रहा है। दीक्षा शताब्दी वर्ष में आचार्य श्री हस्तीमल जी म.सा. से संबंधित पावन दिवसों को एवं संघ के कुछ महत्वपूर्ण दिवसों को भी उत्साह के साथ विशेष रूप से मनायेगी। ये दिवस इस प्रकार है-

आचार्य भगवन्त पूज्य श्री हस्तीमल जी म.सा. के मुख्य पावन दिवस

माघ शुक्ला 2, रविवार, 26 जनवरी 2020
दीक्षा दिवस शताब्दी वर्ष प्रारम्भ
सामायिक दिवस

वैशाख शुक्ला 3, रविवार, 26 अप्रेल 2020
आचार्य पदारोहण दिवस
स्वाध्याय दिवस

वैशाख शुक्ला 8, शुक्रवार, 01 मई 2020
29वां स्मृति दिवस
सामूहिक प्रार्थना दिवस

पौष शुक्ला 14, बुधवार, 27 जनवरी 2021
जन्म दिवस-**प्रतिक्रमण दिवस**
(आवश्यक सूत्र पर परीक्षा आयोजन)

माघ शुक्ला 2, शनिवार, 13 फरवरी 2021
दीक्षा दिवस शताब्दी वर्ष समापन
सामायिक दिवस

संघ एवं संघीय संस्थाओं के मुख्य दिवस

24 सितम्बर 2020, गुरुवार
श्राविका गौरव दिवस
संस्कार बोध दिवस

17 नवम्बर 2020, मंगलवार
संघ समर्पण दिवस
संकल्प दिवस

21 नवम्बर 2020, शनिवार
युवा शक्ति दिवस
व्यसन मुक्ति दिवस

सम्यग्ज्ञान प्रचारक मण्डल के विशेष कार्यक्रम

- आचार्य श्री हस्ती व्याख्यान माला का देश के विभिन्न शहरों में आयोजन।
- जिनवाणी में प्रतिमाह आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर लेख।
- ''जैन जीवन शैली'' पर जिनवाणी विशेषांक।

स्वाध्याय संघ के विशेष कार्यक्रम

- स्वाध्याय प्रवृति का 75वां वर्ष भी हर्ष व उल्लास के साथ इसी वर्ष मनाया जायेगा।
- 75 नये स्वाध्यायी तैयार करना।
- 175 क्षेत्रों में पर्युषण पर्वाराधन।
- वृहद् स्वाध्यायी सम्मेलन का आयोजन।
- आचार्य श्री हस्ती द्वारा रचित पुस्तकों पर प्रत्येक माह स्वाध्यायियों के बीच परीक्षा का आयोजन।
- ''स्वाध्यायी-मंजुषा'' पुस्तक का पुनः प्रकाशन।

शिक्षण बोर्ड के विशेष कार्यक्रम

- आचार्य श्री हस्ती पर प्रश्नोत्तरी पुस्तक का प्रकाशन।

- आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर जुलाई 2020 व जनवरी 2021 में आयोजित परीक्षाओं में कम से कम 10 अंकों का प्रश्न पत्र रखा जायेगा।
- प्रतिमाह आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर रत्न संघ ऐप के माध्यम से ऑनलाईन परीक्षाओं का आयोजन।

संस्कार केन्द्र के विशेष कार्यक्रम

- अखिल भारतीय श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, श्राविका मण्डल व युवक परिषद की सभी शाखाओं व सम्पर्क सूत्रों वाले स्थानों पर संस्कार केन्द्र खोलने का लक्ष्य।

सभी कार्यक्रमों की सफलता के लिए निम्नलिखित प्रयास सभी द्वारा करना–

- रत्न संघ के समस्त परिवारों की जानकारी लेकर रत्न संघ ऐप से जोड़ना।
- आचार्य श्री हस्ती के व्यक्तित्व व कृतित्व पर आधारित संगोष्ठी, भाषण प्रतियोगिता, निबन्ध, नाटक, भजन आदि कार्यक्रमों का आयोजन करना।
- अधिकतम प्रचार व प्रसार एवं व्यक्तिगत सम्पर्क करना।

आगामी पर्व

फाल्गुन शुक्ला 8	मंगलवार	03.03.2020	अष्टमी
फाल्गुन शुक्ला 14	रविवार	08.03.2020	चतुर्दशी
फाल्गुन शुक्ला 15	सोमवार	09.03.2020	पक्खी पर्व, फाल्गुनी चौमासी
चैत्र कृष्णा 8	सोमवार	16.03.2020	अष्टमी, आचार्यप्रवर पूज्य श्री हीराचन्द्रजी म.सा. का 82 वां जन्मदिवस
चैत्र कृष्णा 14	सोमवार	23.03.2020	चतुर्दशी, पक्खी पर्व

BOOK PACKETS CONTAINING PERIODICALS Value of Periodical From Rs.1/- to Rs.20/- For First 100 gms or part thereof Rs. 2/-

स्वामी, प्रकाशक व मुद्रक धनपत सेठिया द्वारा अ.भा. श्री जैन रत्न हितैषी श्रावक संघ, नेहरु पार्क, जोधपुर (राज.) से प्रकाशित, सम्पादक-प्रकाश सालेचा एवं इण्डियन मैप सर्विस, सेक्टर-जी, राममन्दिर के पास, शास्त्रीनगर, जोधपुर से मुद्रित

Contact No. 0291-2636763, 94610-26279 (WhatsApp)
Website- www.ratnasangh.com, Email : absjrhssangh@gmail.com

इस अंक का सौजन्य- गुरुभक्त संघनिष्ठ श्री कनकराज जी महेन्द्र जी कुम्भट-जोधपुर, मुम्बई